पथिक गीत गाते जाओ

कविता-संग्रह

कवयित्री
बिमला रावर सक्सेना

प्रकाशक : मचान
आसान नगर, जिला- नदिया, पश्चिम बंगाल, पिन- 741161
म.न. 46-ए, अनारकली गार्डन, जगत पुरी, नजदीक शिव साईं हनुमान मंदिर, दिल्ली-110051
email:machanpublishinghouse@gmail.com

पथिक गीत गाते जाओ
(कविता-संग्रह)
बिमला रावर सक्सेना

Pathik Geet Gatey Jayo
Bimla Rawar Saxena

प्रथम संस्करण : नवंबर 2018

ISBN : 978-81-939974-3-7

© सर्वाधिकार लेखकाधीन
इस पुस्तक अथवा इस पुस्तक के किसी अंश को इलेक्ट्रोनिक, मेकेनिकल, फोटोकॉपी , रिकार्डिंग या अन्य सूचना संग्रह साधनों एवं माध्यमों द्वारा मुद्रित अथवा प्रकाशित करने के पूर्व मचान पब्लिशिंग हॉउस और लेखिका की लिखित अनुमति अनिवार्य है।
आवरण अलंकरण : सनोज कुमार
पृष्ठ सज्जा : सोमा बिस्वास
फोटोग्राफी : जीनत सुलताना

प्रकाशक : मचान
अनंतालक्ष्मी क्रिएशन
आसान नगर, जिला- नदिया, पश्चिम बंगाल, पिन- 741161
म.न:-46-ए, अनारकली गार्डन, जगत पुरी, नजदीक शिव साईं हनुमान मंदिर, दिल्ली-110051
email:machanpublishinghouse@gmail.com
दूरभाष : अतुल कुमार- 9810911826, डॉ. पूरन सिंह- 9868846388
केदारनाथ शब्द मसीहा- 9810989904, सोमा बिस्वास- 8800179218

मुद्रक : रॉयल प्रिंटर्स, दिल्ली

मूल्य : 200.00 रुपये

पथिक गीत गाते जाओ

-शब्द मसीहा

बिमला रावर सक्सेना जी ज़िंदगी के कई पायदान पार करते हुए उम्र के आठवें दशक में हैं और निरंतर रचना कर्म में तल्लीन हैं। जीवन के अनेक अनुभव उन्होंने अपनी रचनाओं के माध्यम से हम पाठकों के बीच रखे हैं। उनकी कविताओं की खास बात यही है कि वे जीवन के यथार्थ को शब्द देती हैं। उनकी हर रचना में कोई बिंदु दिल को गहरे तक छू जाता है। पाठक उसे पढ़कर कभी गहरे हर्ष का अनुभव करता है तो कभी अपने से जोड़कर दु:ख और विषाद का। यही लेखन की कामयाबी है। इन रचनाओं को जीवन का रोज़नामचा भी कह सकते हैं। उनकी रचनाओं में जीवन की खुशबू है जो खुरदुरे यथार्थ की चुभन को महसूस करने का अवसर देती है।

हे ! पथिक गीत गाते जाओ
तो कट जायें राहें जीवन की
कुछ रोने के, कुछ हँसने के
कुछ आने वाले सपनों के
कुछ अपने जीवन के पलछिन के
कुछ बीते पल जो हर दिन के
पथिक याद कर कहते जाओ
तो कट जायें राहें जीवन की

इन पंक्तियों की तरह ही हर व्यक्ति की अभिलाषा और वास्तविक जीवन है। जब हम उम्र के आठवें दशकीय पायदान पर हों तब मन अनायास ही गुजरे जीवन को याद कर मुस्कुरा उठता है और स्मरण करता है जीवन के दु:ख-सुखों को। आप अपनी रचना में इस बात की तस्दीक भी करती हैं :-

कुछ अच्छे क्षणों में मिली विहँसती हुई यादें
अपनों से मिले प्यार की महकती हुई यादें
ये वक्त की धारा में बहकती हुई यादें
दिल और दिमाग की कारा में रहती हुई यादें

जीवन सफर में मनुष्य अनुभव के अनेक रत्न बटोरता जाता है। कुछ यादें हँसाती और गुदगुदाती हैं तो कुछ यादें मन को भारी भी कर देती हैं। यह बात भी उल्लेखनीय है कि

दु:ख की लकीरें ज्यादा गहरी होती हैं और मनुष्य उन्हें भुलाने की नाकाम कोशिश में और गहरा करता चला जाता है। कभी-कभी मन यह भी सोचता है कि कोई मीत ही न होता तो बेहतर होता। ऐसी स्थिति तब आती है जब मनुष्य बहुत गहन उदासी का अनुभव करते हुए विरक्ति का अनुभव करता है। वे लिखती हैं कि :

हर्ष न हो, शोक न हो
राग न, वैराग्य न हो
जीत न हो , हार न हो
भाग्य न, सौभाग्य न हो
शुष्क सा जीवन चले यह
शुष्क हो, उर का संगीत
चल सखी उस देश को,
हो न जहाँ कोई भी मीत

हम में से हर एक जानता है कि जीवन एक यात्रा है और हर पड़ाव को हमें छोड़ते हुए जाना है। हम किसी भी पड़ाव पर रुक नहीं सकते सिवाय मृत्यु के पड़ाव के। मगर मन बहुत लचीला होता है, वह सम्बन्ध बना ही लेता है अपने आसपास से, अपने साथियों से, वस्तुओं से। शायद इसे ही मोह कहते हैं। जीवन साथी के साथ का मोह और अपनत्व तो इस सबसे ऊपर है जीवन में किसी भी स्त्री के लिए। बिमला रावर सक्सेना जी स्वयं की मनस्थिति को अभिव्यक्त करते हुए कहती हैं कि :-

जो मैं जानती तुम यूँ चले जाओगे
तुमको अंतर की परतों में रख लेती
फूल राहों में तेरी बिछाकर सनम
अपने दामन को काँटों से भर लेती

लेकिन जीवन का सत्य यही नहीं है। जीवन का सत्य यह भी है कि हम दूसरों के दु:ख-दर्द को देखकर भी द्रवित होते हैं और मन सहज ही पुकार उठता है :-

दर्द देखे दूसरों के अपने गम याद आ गए
दिल के कोनों से निकल आँसू पलक तक आ गए
भूल जाओ दर्द को, कहना बहुत होता सहज
किंतु यह सबको पता झूठी तसल्ली है महज
जानते सब हैं नहीं आसान ग़म को भूलना

साँस की डोरी है जब तक है गमों में झूलना

जीवन की एक और सच्चाई की तरफ वे हमारा ध्यान आकर्षित करती है और जीवन से जुड़ने की वकालत करती हैं :-

स्वत्व को भूल कर ही हम
पूर्णत्व को प्राप्त कर सकते हैं
मैं को भुलाकर ही
परम-तत्व को प्राप्त कर सकते हैं
बूँद-बूँद बहता पानी
नदी है बन जाता
नदी का जल
अपना अस्तित्व मिटाकर
सागर है बन जाता

जीवन में दोस्तों का साथ, अपनों का साथ जीवन को जल्द ही खुशहाल बना देता है। किसी अपने के कंधे पर सिर रख कर दो आँसू बहा लेने से जैसे गम से निस्तार मिल जाता है। मानवीय जीवन की यह बहुत बड़ी उपलब्धि है। जब तक मनुष्य एकल भाव में जीवन को जीता है जीवन का समग्र आनंद नहीं ले सकता।

बिमला रावर सक्सेना जी की कविताओं में विचारों की बहुलता है। जीवन के प्रति आशा है, संघर्ष के लिए आह्वान है और सकारात्मकता है कि हर दु:ख से भी निभाते हुए कैसे खुश रहा जा सकता है। इसलिए मैं इन कविताओं को भोगा हुआ यथार्थ और जीवन से पाया हुआ दर्शन मानता हूँ।

भाषा के तौर पर और रचनाओं की गुणवत्ता के हिसाब से मैं मानता हूँ कि रचनाओं में मूल उद्देश्य शब्दों द्वारा खूबसूरती से अभिव्यक्त हुआ है। रचनाओं को बाँधने की कोशिश नहीं की है बल्कि खुशबू की तरह बिखरने का मौका दिया है। यही वजह है कि रचनाएँ पाठक को खुद से किया हुआ संवाद ही प्रतीत होती हैं। मेरे लिए बिमला रावर सक्सेना सिर्फ एक लेखिका नहीं हैं वरण मेरी दीदी माँ हैं, माँ के जाने के बाद स्नेह की छत्रछाया हैं। मैं उनके दीर्घायु होने, स्वस्थ रहने के साथ ही उनके निरंतर लेखन की शुभकामनाएँ प्रेषित करता हूँ।

भवतु सर्व मंगलम्

केदार नाथ "शब्द मसीहा"

नई दिल्ली

क्र.सं.	शीर्षक	पृ.सं.	क्र.सं.	शीर्षक	पृ.सं.
1.	थोड़ी-थोड़ी सी भक्ति दे दे	01	33.	खो गए हैं गीत मेरे	40
2.	प्रभु चरणों में	02	34.	संबंधों के संदर्भ में	41
3.	पथिक गीत गाते जाओ	03-04	35.	हाशिए पर बैठकर	42
4.	बहती हुई यादें	05	36.	लक्ष्य की ओर	43-44
5.	मन संतोषी रहे सदा	06	37.	रेत के घर का जीवन	45
6.	ज्योति ले आओ कहीं से	07	38.	कौन-सी मजबूरी	46
7.	एक भूल	08	39.	रात के अँधेरे	47
8.	मेरा मौन	09-10	40.	बिना दस्तक दिए	48
9.	कितने युगों के बाद	11	41.	समष्टि की ओर	49
10.	कितने अँधियारे	12	42.	शाम और सुबह	50
11.	मन की पीर	13	43.	अनजाना सपना	51
12.	डोला हसरतों का	14	44.	फिर भेद क्यों है	52
13.	चल सखी	15	45.	उन दिनों की कसक	53-54
14.	मेरा जुनून	16	46.	जो गीत तुमने गाए	55
15.	निरमोहिया	17	47.	मेरा मन बौरा उठता	56
16.	खोए उजियारे	18-19	48.	दिलदार मौसम	57
17.	तुम हमें न बुलाया करो	20	49.	रिश्तो की बाड़	58
18.	अदृश्य के प्रति	21	50.	हौले से रोती है	59
19.	दर्द का रिश्ता	22	51.	निपट अकेली	60
20.	यादों की आँधियाँ	23	52.	कुछ हमारी सुनिये	61
21.	अन्दर का इंसान	24	53.	गीली आँखों से	62
22.	रंग बदलती दुनिया	25-26	54.	एक बार सुलझा दे	63
23.	तुम्हारी पदचाप	27	55.	रोटी के चक्कर में	64
24.	दिल का हाल	28	56.	मैंने अपने गीतों में	65
25.	रिश्तों की राख़	29	57.	क्या नारी होना	66
26.	अपने ग़म याद आ गए	30	58.	जब एक याद	67
27.	घर की ओर	31-32	59.	एक दिन अपने लिए	68
28.	बेनाम रिश्ते	33-34	60.	यादों के रेले	69
29.	जिंदगी क्या है	35	61.	हवायें पहाड़ की	70
30.	उम्र के इस मोड़ पर	36-37	62.	शायद किसी दिन	71
31.	सम्मोहन	38	63.	कुछ दिन के लिए	72
32.	अनुत्तरित प्रश्नों का बोझ	39	64.	निर्णय भी एक हो	73

क्र.सं.	शीर्षक	पृ.सं.
65.	खेलती रही जिंदगी	74
66.	हृदयदुर्ग के द्वार पर	75
67.	अस्तित्वहीनता का बोध	76
68.	विदेह	77
69.	साँसों का सफर	78
70.	एक सम्बल हो तुम्हीं	79
71.	अम्बर के तारे	80
72.	जा रहे भगवान भास्कर	81
73.	अनुभवों की गूँज	82
74.	दोस्ती का रिश्ता	83
75.	गम का पुल	84
76.	यादों की रेखा	85
77.	आओ दिल उदास है	86
78.	खुद से बेगाने रहे	87
79.	अतीत के पन्नों से	88
80.	कहीं अनजाने में	89
81.	आजकल उल्लू	90
82.	चट्टानों से सर टकरातीं	91
83.	चाहे मेरी आवाज नहीं	92
84.	कैसी जंग	93
85.	सच्ची लगन	94
86.	सिर्फ इन्सान होते	95
87.	अस्मिता को देश की	96
88.	मसले सुलझाने होंगे	97
89.	जीवन का गणित	98
90.	पुराने गलियारों की आवाजें	99
91.	न बेचो ईमान	100
92.	जाग गई वो सोई लड़की	101-102
93.	एक औरत के कितने रूप	103
94.	मां का दिल	104
95.	सच्चा व्यक्ति वही होता	105
96.	नहीं थका मन	106
97.	जिंदगी की नाव	107
98.	घर के भेदी	108
99.	मुस्कुरा उठी दीवारें	109
100.	अनगढ़	110
101.	अधूरे सपनों से आगे	111
102.	जो कभी घर था	112
103.	माँ जैसा न कोई है	113
104.	जीवन एक तपस्या	114
105.	नई सुबह की आगत	115
106.	गायेगी तब गोरी	116
107.	व्यवस्था आपदाग्रस्त है	117
108.	कैक्टस और कँटीली यादें	118
109.	अनोखा भारत	119
110.	मैं यूँ ही भटकी	120
111.	कुछ शेर कुछ बब्बर शेर	121
112.	नाचे मन मोरा	122
113.	चल निकला यादों का बजरा	123
114	बेटी की मां के उदगार	124
115	रिश्तों के मेले	125
116	बॉर्डर	126
117	रिश्ते दिल के कालातीत	127
118	अपनी जड़ों के पास	128
119	ख़्वाब हमने बुने थे	129

थोड़ी-सी भक्ति दे- दे

मेरे भगवान मुझे थोड़ी-सी भक्ति दे-दे
जो दिया मुझे उसे जीने की शक्ति दे-दे

तूने देकर ये जन्म मुझको है वरदान दिया
कितने जन्मों का सिला तूने है भगवान दिया
तू ही माता, तू पिता, तू ही मेरा रखवाला
सारे पापों को क्षमा करता बड़े दिलवाला

कभी न छूटें भली राह, न छूटे भक्ति
जो दिया मुझे उसे जीने की शक्ति दे-दे

मेरे कर्मों को सदा राह सही तुम देना
अब अँधेरों से उजालों में मुझे ले जाना
कर सकूँ कोई भला काम ये हिम्मत देना
काम सबके मैं करूँ इतनी-सी ताकत देना

कर्म करती रहूँ, फल में न रहे अनुरक्ति
जो दिया मुझे उसे जीने की शक्ति दे-दे

सच की राह मिले, सत्य का आधार मिले
हर कड़ी राह में भगवान तेरा हाथ मिले
कर सकूँ सबका भला, दूर बुराई से रहूँ
जो मिले तेरी कृपा, तेरी भक्ति में बहूँ

पाप से दूर रहूँ, पुण्य में हो आसक्ति
जो दिया मुझे उसे जीने की शक्ति दे-दे

प्रभु चरणों में

बैठ आम की डाली पर
इस डाली से उस डाली पर
खुद को झुला रही है
कुहू-कुहू कर काली कोयल
किसको बुला रही है
मधुर मुरलिया बजा रहा है
कोई यमुना तीरे
किसको मुरली सुना रही है
अपने मन की पीरें
कौन छुपा बैठा है
इस नीले अम्बर के पीछे
चमक बिजुरिया करे इशारे
क्यों हम सब को खींचे
गुन-गुन गुंजन करते भँवरे
किसको लुभा रहे हैं
चहक-चहककर प्यारे पंछी
किसको रिझा रहे हैं
किसकी खातिर काँटों में भी
कलियाँ विहँस रही हैं
बनकर फूल किसे मिलने को
पल-पल विकस रही हैं
महक रहे जो डाल-डाल पर
रंग-बिरंगे फूल
गिरते जाकर प्रभु चरणों में
हमें न जाना भूल

पथिक गीत गाते जाओ

हे ! पथिक गीत गाते जाओ
तो कट जायें राहें जीवन की
कुछ रोने के, कुछ हँसने के
कुछ आने वाले सपनों के
कुछ अपने जीवन के पलछिन के
कुछ बीते पल जो हर दिन के
पथिक याद कर कहते जाओ
तो कट जायें राहें जीवन की

पथिक छुपी दिल के कोनों में
जीवन की हर एक कहानी
कुछ कोनों में बैठीं जाकर
स्नेह से पायी कोई निशानी
पथिक निशानी और कहानी
अंतरतम में रहो छुपाये
तो कट जायें राहें जीवन की

पथिक तुम्हें तो खूब पता है
जीवन तो खुद एक कहानी
रंगमंच पर छोड़ के जाते
सब ही अपनी एक निशानी
पथिक ये अभिनय करते जाओ
पथिक गीत तुम गाते जाओ
तो कट जायें राहें जीवन की

पथिक हर कदम पर दोराहे
चौराहे तेरी राहों में
सोच समझकर राहें चुनना
अगर पहुँचना मंजिल पर है
सुनो कठिन राहें जीवन की
डोर न तजना तुम जीवन की
पथिक कठिन राहें जीवन की

बहुत कठिन मंजिल की राहें
पर तुम साहस नहीं छोड़ना
बढ़ जाओ फैलाकर बाहें
पथिक हजारों लोग मिलेंगे
तुमको जीवन की राहों में
कुछ तुमको सुख पहुँचायेंगे
कुछ भर देंगे आहों में
पथिक संतुलन तुम न खोना
निर्धारित पथ पर बढ़ जाना
तो मिल जाएँगी राहें जीवन की

पथिक ये जीवन एक खिलौना
सोच समझ खेलते जाना
सुख-दु:ख जो भी मिलते जायें
खेल समझ कर झेलते जाना
बाधाओं से न घबराना
पथिक कर्म तुम करते जाना
हो जायेंगी पूर्ण कामनायें जीवन की
और मिल जायेंगी वाँछित राहें जीवन की

बहती हुई यादें

ये वक्त की धारा में बहती हुई यादें
दिल और दिमाग की कारा में रहती हुई यादें
ये धुँधले पन्नों को पलटती हुई यादें
ये जीवन के बीते क्षणों में भटकती हुई यादें

दिल के हर कोने में मचलती हुई यादें
याद आने पर यह बहलती हुई यादें
तस्वीर बन के कागज़ पर चिपकी हुई यादें
एल्बम के अन्दर पन्नों में छिपती हुई यादें

ये काम के भार को सहती हुई यादें
चुपचाप बंद होठों से कुछ कहती हुई यादें
अतीत में मिले दुखों की सिहरती हुई यादें
बिछड़े हुए अपनों की बिलखती हुई यादें

कुछ अच्छे क्षणों में मिली विहँसती हुई यादें
अपनों से मिले प्यार की महकती हुई यादें
ये वक्त की धारा में बहती हुई यादें
दिल और दिमाग की कारा में रहती हुई यादें

मन संतोषी रहे सदा

मन माने सब आपने मन माने सब दूर
कछु घाटा नाहीं परै छाड़ो गरब गरूर
छाड़ो गरब गरूर सभी को अपना मानों
सब के दिल को अपने दिल जैसा ही मानों
बीत गया जो उसे छोड़ आगे बढ़ जा बन्दे
यही समझ, ये-वो, सब उस रब के ही बन्दे
लगा मुखौटे घूम रहे हैं घर-घर में इंसान
कौन किसे है ठग रहा सबको लो पहचान
लेकिन दुश्मन दूर रहे यह बात समझना
सबसे करो प्रेम बात तो सही है लेकिन
कहते हैं भगवान कभी अन्याय न सहना
तूने जो दिया, हमें बहुत दिया करतार
बस करना इतनी दया मन पर रहे इख्तियार
मन होकर बौराना कभी इत-उत न भागे
चादर भीतर रहें पैर सबकी बस बढ़ें न आगे
कहे बावरा मन मेरा यही प्रभो ! हाथ जोड़ के
मन संतोषी रहे सदा, न जाए दौड़-दौड़ के

ज्योति ले आओ कहीं से

घिर रहा है, तिमिर चहुँ दिशि
ज्योति ले आओ कहीं से
प्रज्जवलित है अग्नि चहुँ दिशि
अमृत जल लाओ कहीं से
दर्द का साम्राज्य छाया
ढूँढ लो खुशियाँ कहीं से

शत्रुता सब ओर क्यों है
स्नेह ले आओ कहीं से
ऊंच-नीच, जात-पाँत और
निर्धन-धनिक का भेद क्यों है
युद्ध की बातें नहीं , हो एकता
शांति का संदेश ले आओ कहीं से

स्वार्थ, लालच बेईमानी बढ़ रहे हैं
ढूँढकर ईमान ले आओ कहीं से
बलात्कार, व्यभिचार, अत्याचार होते
चरित्र मयार्दा भी ले आओ कहीं से
आपसी विश्वास नैतिकता न भूलें
प्रेम का संदेश ले आओ कहीं से

डूबते सूरज को तुमको ही बचाना
रोशनी की किरण ले आओ कहीं से
देश अपना हमको है सर्वश्रेष्ठ बनाना
देशप्रेम की मधुर भावना लाओ कहीं से
घिर रहा है, तिमिर चहुँ दिशि
ज्योति ले आओ कहीं से

एक भूल

मेरे साथ-साथ साथ हँसा था तू
मेरे साथ-साथ क्यों न तू रो सका
तेरी जिंदगी तो सँवर गई
मेरे अश्क क्यों न तू धो सका

मेरी जिंदगी के चमन में भी
कभी मुस्कुराई बहार थीं
वो फिजायें जाने किधर गईं
वो फिजायें क्यों तू दे सका

यूँ उजाड़कर मेरे बागबाँ
ये खिजाएँ दे के किधर गया
लिए फूल चुन के थे बारहां
तो ये ख़ार भी क्यों न ले सका

तुझे अपना हमने समझ लिया
हमें लूटा तेरे ख्याल ने
बड़ी भूल थी ये समझ गए
तू पराया फिर भी न हो सका
मेरे साथ-साथ हँसा था तू
मेरे साथ क्यों न तू रो सका

मेरा मौन

आज मैं क्यों मौन हूँ ?
क्यों निराशा और आशा की घटायें,
मौन नर्तन कर रही हैं?
शून्य से अंतस पटल पर
शत कोटि रेखाएं खिंचीं हैं
किन्तु कितनी गहन है, ये कौन जाने ,
कौन माने ?
क्यों अचानक इक शिकारी बिछाता जाल आकर
और क्यों बोला मनुज जाता उलझ है
क्यों अविश्वासों में फँसकर एक मानव
दूसरे का शत्रु बन जाता यकायक
बहुत से यह प्रश्न आ जाते हैं जब-तब
और मुँह बाकर, मुझे आकर सताते
एक उत्तर घूम जाता है यही बस-
यदि हो जाएं सबकी कामनायें
मान्यताएं न रहें कोई अधूरी
सृष्टि रसमय हो
रहे छाई सदा इक भृंग स्वर लय
और स्वयं ऋतुराज का साम्राज्य छा जाए धारा पर
दर्द पीड़ा का जगत में नाम न हो
यातनाएं खत्म हो जाएँ सभी की
हाइड्रोजन और एटम बम्ब के युग से निकलकर
शांति के युग में पहुँच जाए जगत यदि
प्यार के वातावरण में मगन हो जाए सकल जग

हो सरल विश्वास आपस में
रहें सद्भावनाएं
प्रेम में पग जाएं सारे विश्व के मानव सभी
तब टूट जाए मौन मेरा
गा उठूँगी झूमकर मैं
शून्य अंतस का उड़ेगा
दु:ख चिन्ता की लकीरें
लुप्त हो मिट जाएँगी
तब मौन होगा -
भग्न मेरा .
दूर होगी सब निराशा
शून्य अंतस का बदल जाएगा
अँधेरे दूर होंगे उजियारा छा जाएगा
निकलेगा गीत-संगीत मौन टूट जाएगा

कितने युगों के बाद

कितने युगों के बाद, हम आज हैं गुनगुना रहे
कुछ मन की सुन रहे हैं, कुछ मन की हम सुना रहे

कहने को तो बहुत था पर
कहने से भी क्या फायदा
अपने को क्यों सताए हम
यह कौन-सा है कायदा

दिल को न अब सताएंगे, खुशियों को हम बुला रहे
कितने दिनों के बाद हम, आज हैं फिर गुनगुना रहे

किस-किस के गम का दें सिला
दुनिया से हम को क्या मिला
अरे ! जाम उठा खुशी का अब
खुद ही को आज हम लें पिला

न इंतजार में उम्र गवाएंगे, अकेले ही हम मुस्कुरा रहे
कभी हँसते हैं गैरों पे हम, कभी खुद की हँसी उड़ा रहे

खुद से तो सुर्ख रूह हों हम
खुद से न कुछ गिला रहे
कितने युगों के बाद हम
आज हैं हम गुनगुना रहे

कितने युगों के बाद, हम आज हैं गुनगुना रहे
कुछ मन की सुन रहे हैं, कुछ मन की हम सुना रहे

कितने अँधियारे

मेरी जिंदगी में कितने
अँधियारे भर दिए हैं
ये किस जन्म के बदले
यूँ हमसे ले लिए हैं

हमने तो तुझसे कोई
जन्नत नहीं थी माँगी
भरने को अपनी झोली
मन्नत नहीं थी माँगी

न छीन लेनी चाही
तुझसे तेरी ये दुनिया
मैं जानती हूँ कितनी
निर्दयी तेरी ये दुनिया

मैंने न फूल माँगे
तेरे बाग के कभी भी
काँटों के संग रहकर
काँटों से दोस्ती की

फिर भी क्यों तूने मेरे
उजियारे ले लिए हैं
मेरी जिंदगी में कितने
अँधियारे भर दिए हैं

मन की पीर

मैं तेरे गम से घायल हूँ
कैसे तुझे बँधाऊँ धीर
मुझे समझकर मन का साथी
कह दे अपने मन की पीर

मिलना और बिछड़ना जग में
यही सत्य दो अटल महान
एक जगाता ज्योति हृदय में
दूजा कर देता है वीरान

आशा और निराशा सबको
मिलती रहती हैं जीवन में
फूल और काँटे मिलना तो
नियति रहती है जीवन में

शूलों से टकरा कर ही तो
खिलते हैं जीवन में फूल
असफलता से घबरा जाना
होते ही है बड़ी गहरी भूल

धर धीरज बढ़ आगे पथ पर
नहीं बहे नैनों से नीर
मुझे समझ कर मन का पाखी
कह दे अपने मन की पीर

डोला हसरतों का

मँगा एक डोला विदा कर दिया है
सभी हसरतों को विदा कर दिया है

सजाए थे सपने बड़ी मुद्दतों से
बहुत देर से अरमां पाले थे दिल में
जो बचपन से लेकर जवानी तलक हमने
आशाओं के घर बनाए थे दिल में

कभी ये करेंगे, कभी वो करेंगे
कभी ये बनेंगे, कभी वो बनेंगे
कभी आसमां के, सितारों को लाकर
चूनर में अपनी, उन्हें हम जड़ेंगे

यूँ लगता था बस पल में झोली में भरकर
समेटेंगे खुशियाँ यूँ हम कुल जहां की
मगर मुस्कुरा के खुदा ने कहा
जब थीं बाँटी खुशियाँ, गई तू कहाँ थी?

और यूँ आकाश से
आ गए हम जमीं पर
और सपनों से खुद को
जुदा कर लिया है

मँगा एक डोला विदा कर दिया है
सभी हसरतों को विदा कर दिया है

चल सखी

चल सखी उस देश को,
हो न जहां कोई भी मीत
एक छोटी सी कुटी हो,
हो सुनसान चहुँ दिशि
क्षुब्ध-सा वातावरण हो
क्षुब्ध-से हों प्रातः और निशि
एक मैं और मेरा दुख हो,
हो मेरा नीरव-सा गीत

हर्ष न हो, शोक न हो
राग न, वैराग्य न हो
जीत न हो , हार न हो
भाग्य न, सौभाग्य न हो
शुष्क सा जीवन चले यह
शुष्क हो, उर का संगीत
चल सखी उस देश को,
हो न जहाँ कोई भी मीत

मेरा जुनून

जो मैं जानती तुम यूँ चले जाओगे
तुमको अंतर की परतों में रख लेती
फूल राहों में तेरी बिछाकर सनम
अपने दामन को काँटों से भर लेती

मेरे जीवन को सूना क्यों कर दिया
मैंने तुमसे सितारे तो माँगे नहीं
मेरे जीवन में वीराने क्यों भर दिए
जन्नतों के नज़ारे तो माँगे नहीं

मैंने तुम से बहारें तो माँगी नहीं
चाँदनी की कतारें तो माँगी नहीं
मैं तो काबिल नहीं थी तुम्हारे पिया
तुमने जो भी दिया था बहुत कुछ दिया
कदमों में सिर्फ़ तेरे
थोड़ी जगह का सवाल था
वरना तो जीना तुम बिन पूरा बवाल था

मेरी मंजिले तो बस तुम्हारा सुकून था
मिल जाए चैन तुमको मेरा यही जुनून था
मेरे लिए तो तुम ही, मन, प्राण, शान थे
भगवान मेरे तुम थे, हम तो नादान थे

तुम समझ लेते अगर मेरे अहसास को
तो मैं दुनिया में मर मर के जी लेती
जो मैं जानती, तुम यूँ चले जाओगे
तुमको अंतर की परतों में रख लेती
फूल राहों में तेरी बिछाकर सनम
अपने दामन को काँटों से भर लेती

निरमोहिया

छाई बदरिया चमके बिजुरिया जीयरवा तड़पाए
मोरे पिया परदेस गए रे अब तक लौट न आए
हार गई कर-कर विनती में, पतियाँ लिख नैना भर आए
बाट तकत मोरी बीती उमरिया, मीत पियरवा लौट न आए

काहे री बिरीहनिया रोवे
काहे री मन को भरमाए
वो निरमोहिया दूर नगरिया
बैठा ही तुझको छल जाए

छाई बदरिया चमके बिजुरिया
मोरा जीयरवा तड़पाए
मोरे पिया परदेश गए रे !
अब तक लौट न आए

खोए उजियारे

किंकर्तव्य विमूढ़ हूँ
क्या कहूँ ?
किससे कहूँ ?
आत्म प्रवंचना
आत्म प्रताड़ना
या-
आत्मघात
किसे श्रेय दूँ ?
आत्मघात पाप है
जीवन एक श्राप है
क्या करूँ ?
कब तक सहूँ ?
चाहती हूँ चली जाऊँ
ऐसी जगह पर
मिल जाए जहाँ मुझको मेरा
खोया हुआ लक्ष्य
आज तक मैं
शांति की खोज में
घूम-घूमकर
भटक -भटककर
थक-थक गई

संतोष प्राप्ति के लिए
सारी ज़िंदगी
असंतोष में ढल गई
उफ़ !
आकुल हूँ
व्याकुल हूँ
मार्ग अँधियारे हैं
खोए उजियारे हैं
पंथ से विमुख हूँ
लक्ष्य से भ्रष्ट हूँ
यत्न से
मिले मार्ग
खोई हुई मंजिल का
तो यह विडम्बना
मेरे इस जीवन की
हो समाप्त
शांति और संतोष की
धारा में समाँऊ मैं
कुछ पाऊँ मैं
खो जाऊँ मैं...

तुम हमें न बुलाया करो

तुम हमें न बुलाया करो
हमने दिल को अँधेरों से है ढक लिया
तुम दीया न जलाया करो

चाँदनी रात में हमको लगता है डर
चाँद की चाँदनी हम पे ढाती क़हर
चाँद को देखकर गीत गाओ न तुम
यूँ हमें न रुलाया करो

मुश्किलों से भरा ज़िंदगी का सफ़र
सब नहीं सच है, जो हमको आता नज़र
ज़िंदगी ने बहुत गम हैं खुशियाँ हैं कम
तुम न सच को भुलाया करो

कसमों- वादों की दुनिया है होती अजब
कोई वादा जो तोड़े तो होगा गज़ब
झूठे वादों के झूलों में साथी हमें
तुम न झूला झुलाया करो

तुम हमें न बुलाया करो
हमने दिल को अँधेरों से है ढक लिया
तुम दीया न जलाया करो

अदृश्य के प्रति

अरे ! कौन अदृश्य देव तुम
छवि दिखलाते
सृष्टि के हर एक कण-कण में
हलचल स्पंदन से भर जाते
मानव के मृदु अन्तस्तल को
भ्रू-कुंचन से ही खेल खिलाते
एक बार यदि यह बतला दो
तो मन वीणा पर गाऊँ
अर्चन के स्वर भर लूँ
उषा सुंदरी की लाली में
लज्जा के रंग हों भर जाते
प्रखर सूर्य की तीक्ष्ण रश्मियों को
पल में शीतल कर
मृदुल बनाते
इस रहस्य को मुखर करो तो
मन के अन्दर के मन्दिर में
वंदन के स्वर भर लूँ
पटपरिवर्तन करते क्षण में
जगति को उन्मुक्त बनाते
किसको सत्ता के नियमन में
बँध जाता सारा जड़ चेतन
कौन-
एक संकेत मात्र से
क्रिया कराते
एक प्रश्न का उत्तर दो तो
हृदय भवन के प्रांगण में
नर्तन के स्वर भर लूँ

दर्द का रिश्ता

तुमसे मिलना कोई नई बात नहीं थी
अक्सर ही जिंदगी के सफ़र में
राहों में चौराहों में
मोड़ों पर या दोराहों में
चंद लम्हों के साथी मिल जाते हैं
जाते-जाते कुछ यादें भी दे जाते हैं
पर तुम से मिलना
मिलकर अनजाने में जुड़ जाना
अंतर के तारों का
तुम्हारी ओर मुड़ जाना
एक नया अनुभव था
कैसे हम एक-दूसरे को
जानने लगे
पहचानने लगे
कैसे हम बिना बोले भी
मन की बातों को जानने लगे
कैसे हम एक दूसरे से सुकून पाने लगे
शांति से बैठकर
इस विषय पर शोध किया
और समाधान में पाया
कि यह हमारे एहसासों के बंधन थे
ये हमारे दर्द के नातों के बंधन थे
जिन दर्दों में हम
दिन-रात पिसते थे
उन्हीं के बनाए हुए
ये मेरे तुम्हारे रिश्ते थे

यादों की आँधियाँ

कोई हमें बताये तो
बीते दिनों की याद के
साये हमें सतायें क्यों
अच्छे बुरे जो पल जिए
अमृत या विष जो भी पिए
दिल में जो जख़्म थे किये
वे तो हमीं ने खुद सिये
ग़र हमको कुछ नहीं मिला
इसका किसी से क्या गिला
फिर भी ये बेचैनियां है क्यों
आँखों में वीरानियाँ हैं क्यों
कोई मेरे दिन रात में
यादों की आँधियाँ चला
पल-पल मुझे रुलाए क्यों
कोई हमें बताएं तो
बीते दिनों की याद के
साये हमें सतायें क्यों

अन्दर का इंसान

अगर तुम अपनी आँखों में
कुछ प्यारे से सपने सजा लो
अगर तुम अपने मन प्राणों में
किसी की मीठी यादें बसा लो
अगर संघर्षों से जलते-
जीवन की लपटों को तुम
अपनी शीतलता से बुझा लो
अगर तुम दूसरों के पथ के
काँटे चुनकर
अपनी राहों में बिछा लो
अगर तुम दुनिया के दु:ख-दर्द को
अपने अंतर में छुपा लो
अगर तुम दीन-हीन दुखियारों को
अपनी पनाहों में बुला लो
अगर तुम दुनिया के ठुकराए मानव को
अपनी बाँहों में सुला लो
तो-
सृष्टि का रंग बदल जाएगा
सूरज, चाँद सितारों की
जगमग से
दृष्टि का रंग बदल जाएगा
और-
तुम्हारे अन्दर का इंसान
भगवान बन जाएगा

रंग बदलती दुनिया

रंग बदलती इस दुनिया में
सब कुछ लगता फ़ानी है

कुछ भी यहाँ नहीं अपना है
दुनिया आनी जानी है

कोई ठगे दूसरों को
और कोई अपने को ठगता

कोई जला रहा औरों को
और कोई खुद ही जलता

कोई करे बुराई सबकी
कोई बुराई है सहता

कोई हँसी का पात्र बन रहा
कोई हँसी में सब कहता

ऐसा लगता नियम न कोई
सब करते मनमानी हैं

रंग बदलती इस दुनिया में
सब कुछ लगता फ़ानी है

कुछ पल पहले झूल रहा था
जो घमंड की कुर्सी पर

देखो चढ़ काँधों पर जाता
चढ़े काठ की अर्थी पर

पल में रंक बने राजा
और राजा क्षण में बनता रंक

बंधा मनुज नियति चक्कर में
फिर भी घूम रहा नि:शंक

सोच रही मैं हूँ पागल या
यह दुनिया दीवानी है

रंग बदलती इस दुनिया में
सब कुछ लगता फ़ानी है

भाई है भाई का दुश्मन
करे दोस्ती ग़ैरों से

नहीं जानती बचेगा कैसे
इन ग़ैरों के फेरों से

रातों-रात धनी होने के
चक्कर सब हैं लगा रहे

पैसों के लालच में देखो
टक्कर खुद को लगा रहे

बाहर से सब खिल खिल हँसते
सबके अंतर में वीरानी है

रंग बदलती इस दुनिया में
सब कुछ लगता फ़ानी है

तुम्हारी पदचाप

यह मेरा घर तो
रोज वही होता है
कैसा सुनसान-सा
जैसे सोता है
एक सन्नाटा सा
एक अंधेरी सी ख़ामोशी
हर तरफ दिखाई देती है
अपनी आवाज़ में भी
गूँजती सी सुनाई देती है
बेरंग-सी लगती हैं
छतें और दीवारें
खिड़कियाँ दरवाजे
जैसे किसी को पुकारें
आज अचानक
अन्दर आती
तुम्हारी पदचाप ने
ख़ामोशी को तोड़
संगीत भर दिया
बेरंग दीवारों में
रंग भर दिया
सिर्फ़ तुम्हारे कदमों की आवाज़ ने
घर को कैसा जगमगा दिया
यह घर मेरा है
एक बार फिर
यह भाव जगा दिया

दिल का हाल

दिल का हाल बड़ा अजीब-सा है
कभी अमीर हुआ करता था
आज ग़रीब-सा है
कभी दिल में रहते थे
हजारों अरमान अनगिनत सपने
ढेरों तमन्नायें ढेरों पराये अपने
गूँजते थे हरदम खुशी के तराने
ढूँढता था दिल हरदम हँसने के बहाने
होठों को हो गई थी मुस्कुराने की आदत
छुपाये नहीं छुपती थी इस दिल की हालत
लगता था सब कुछ दिल में छुपाएँ
लिखता था दिल
बड़े दिल से कविताएं
फिर एक दिन अचानक
सब कुछ बदल गया
दिल का सारा शोर
सन्नाटों में ढल गया
आज दिल में कोई तमन्ना नहीं
कोई अरमान कोई सपना नहीं
कोई कविता कोई तराना नहीं
मुस्कुराने का कोई बहाना नहीं
अब दिल के पास छुपाने को कुछ नहीं
अब ज़िंदगी में लुटाने को कुछ नहीं
कोरा काग़ज बन गया दिल
दिल में कोई चोर नहीं
सिर्फ़ खामोशियाँ हैं
दिल में कोई शोर नहीं

रिश्तो की राख़

कभी-कभी रिश्तों के बीच
अजीब-सी सीलन पैदा हो जाती है
इस सीलन के चलते
ज़िंदगी बड़ी पेचीदा हो जाती है
यह रिश्ते न मिटते हैं न रहते हैं
लोग चुप रहकर इन्हें सहते हैं
यह रिश्ते बहुत तंग करते हैं
दिन-रात दिल और दिमाग में जंग करते हैं
कभी जब रिश्तो में लग जाती है चिन्गारी
बढ़ जाती है आपस में बे-एतबारी
तब रिश्ते बचाना हो जाता है मुश्किल
साथ-साथ रहना लगता है नामुमकिन
रिश्तों के बीच आग-सी लग जाती है
ज़िंदगी एक बदनुमा दाग़ सी बन जाती है
अगर इन रिश्तो को समय पर न बचाया जाए
इस आग को समय रहते न बुझाया जाए
तो सब कुछ जलकर ख़ाक हो जाएगा
सिवाय राख़ के कुछ हाथ नहीं आएगा

अपने ग़म याद आ गए

दर्द देखे दूसरों के, अपने ग़म याद आ गए
दिल के कोनों से निकल, आँसू पलक तक आ गए

भूल जाओ दर्द को, कहना बहुत होता सहज
किंतु यह सबको पता, झूठी तसल्ली है महज

जानते सब हैं, नहीं आसान ग़म को भूलना
साँस की डोरी है जब तक, है गमों में झूलना

ज़िंदगी में सुख भी हैं, दुख भी सभी हैं जानते
कुछ के कम हैं, कुछ ज्यादा ये सभी हैं मानते

यूँ ही सुख-दुख के भँवर में, गोते खाते उम्र भर
हैं कभी खुशियाँ कभी ग़म, कहते जाते उम्र भर

एक शायर ने कही है,
बात लाखों की ए दोस्त
देखकर औरों के ग़म,
अपने हैं याद आ जाते दोस्त
कौन रोता और की ख़ातिर,
जमाने में ऐ दोस्त
दर्द अपने देखते हम,
दूसरों के ग़म में दोस्त

घर की ओर

यह कैसा आकर्षण है
जो बार-बार मुझे घर से जोड़ता है
मैं जहाँ भी जाऊँ
मेरे पैरों को घर की ओर मोड़ता है
यह कैसा मोह है
जो मुझे घर के खिड़की दरवाज़ों से
छत कोनों और दीवारों से
बातें करने को कहता है
शायद इसलिए
कि यह घर ही है
जो मेरे सारे सुख-दुख
मेरे सारे अहसासों को समझता है
और उन्हें मेरे साथ-साथ सहता है
मेरे घर की हर ईंट पर
मुझे मेरा नाम दिखाई देता है
हर दीवार से अपना नाम सुनाई देता है
यही वो घर है
जहाँ आती है मेरे नाम की चिट्ठी
लाती है खबर कभी मीठी कभी खट्टी
गवाह हैं मेरे घर की दीवारें
मेरे एक-एक सपने की

कभी उनके साकार होने की
कभी उनके टूटने की
इसी घर में कभी मैं चैन से सोई
और कभी टूट कर रोई
बहुत से सपने यहीं बुने यहीं खोए
बहुत से गीत यहीं गाये
बहुत बार यहीं रोये
इस घर में लिखा मेरे जीवन का किस्सा है
यह घर मेरे अस्तित्व का हिस्सा है
मेरा घर मन्दिर है जहाँ देव वास करते हैं
जिनके नाम की सुगंध से
मेरे घर द्वार महकते हैं
मेरा घर मुझे दुनिया की
सर्द गर्म हवाओं से बचाकर
खुद उन्हें ओढ़ता है
कौन है जो बार-बार
मुझे घर की ओर मोड़ता है

बेनाम रिश्ते

कभी कभी दो लोगों के बीच
एक अजीब-सा तार जुड़ जाता है
एक ऐसा तार
जो दोनों के बीच
एक रिश्ता बना देता है
दोनों इस रिश्ते को
कोई नाम नहीं दे पाते
दोनों एक दूसरे में
माँ की ममता
पिता की हिफ़ाजत
बहन का प्यार
भाई का सहारा
दोस्त की वफ़ा देखते हैं
ये बेनाम रिश्ते
दुनिया को बताते हैं कि
रिश्ते सिर्फ़ दिखावा नहीं
अपना बनने का दावा नहीं
इनमें होती है
भावनाओं की क़द्र
एहसासों की समझ
आँखों और दिल को

पढ़ पाने की सलाहियत
सुख-दुख में शामिल होने की इंसानियत
इन रिश्तों में ऐसे हमदर्द मिलते हैं
जिनके साथ रिश्ते
खून के नहीं दिल के होते हैं
जिनके साथ बंधन
बाँधे नहीं, बँध जाते हैं
यह बेनाम रिश्ते
अपनी पूरी पवित्रता के साथ
फूलों की तरह महकते हैं
इन रिश्तों को निभाने वालों के दिल
भोले पक्षियों की तरह चहकते हैं
ये रिश्ते अपनों से भी अधिक
अपने बन जाते हैं
स्नेह के ये धागे वक्त के साथ साथ
अधिक पक्के होते जाते हैं
चाहे ये रिश्ते मुँह बोले कहलाते हैं
ये बेनाम रिश्ते, जीवन का सच दर्शाते हैं

ज़िंदगी क्या है

कभी कभी
कानों को चीरता हुआ
सन्नाटों का शोर
मेरी ज़िंदगी को
ज़िंदगी से दूर कर देता है
और मैं बड़े निरपेक्ष भाव से
ज़िंदगी की समीक्षा करने लगती हूँ
आखिर क्या है यह ज़िंदगी
प्रेम-प्रीत या हार-जीत
सुख-दुख या गीत-संगीत
अंत उल्लास या रुदन-शोक
मिलन, मोह या वैराग्य बिछोह
ईर्ष्या, घृणा, शत्रुता या मित्रता
क्रोध, आक्रोश या सहयोग, आत्मीयता
स्वार्थ या परमार्थ
विष या अमृत
स्नेहिल मधुर या तिक्त
कैसी है यह ज़िंदगी की चादर
कभी बेरंगी , कभी सतरंगी
हम सारी ज़िंदगी बिता देते हैं
ज़िंदगी की इस बहुरंगी चादर को
बड़े जतन से ओढ़कर
फिर भी एक प्रश्न अधूरा ही रह जाता है
इतने रंग दिखाने वाली
यह ज़िंदगी क्या है?

उम्र के इस मोड़ पर

आज
उम्र के इस मोड़ पर
यह कैसा प्रश्न चिन्ह
लग रहा है मेरे अस्तित्व पर
साठ वर्ष की आयु तक
सहस्त्रों शिष्यों को
शिक्षा दीक्षा देने वाला
उनके पद को प्रकाशित करने के लिए
उनके जीवन को सही दिशा देने के लिए
सदैव उद्यत रहने वाला
मेरे अन्दर का बुद्धिसागर
साठोत्तर होते ही
सब की दृष्टि में
विपरीत दिशा की ओर
कैसे मुड़ गया
साथ सो पाठा की जगह
सठियाया शब्द कैसे जुड़ गया
बिना मुझे बताए
कहाँ खो गया मेरा व्यक्तित्व
कैसे फिसल गया अचानक ही
मेरे हाथों से मेरा अस्तित्व
सब के फैसलों को प्रभावित करने वाला

आज अपने फैसले लेने के लिए भी
असमर्थ हो गया
क्या मेरा संपूर्ण ज्ञान
साठोत्तर होते ही व्यर्थ हो गया
इसे कहूँ नई पीढ़ी की उद्दंडता
या अपने भाग्य की विडंबना
कभी नहीं आई थी हृदय में
इस उम्र की यह कल्पना
यह कैसी बेचारगी है
उम्र के इस मोड़ पर
कहाँ खोजूँ अपना स्वत्व
कैसे हल होगा यह प्रश्न
यह कैसा प्रश्न चिन्ह
लग रहा है आज उम्र के इस मोड़ पर

सम्मोहन

बिसर गईं सब सुधियाँ
सुधियों के दर्पण में
जब से तुम आए
मन दर्पण में कोई चित्र
प्रतिबिंबित नहीं होता
जब से सुधि दर्पण में
तुम हो समाए
परिचय-अपरिचय का
भान भी रहा नहीं
हर परिचय में केवल
तुम याद आए
कोयल की कूक में
पपीहे की हूक में
चातक की प्यास में
बस तुम ही आए
सदियों से सूनी
मन बगिया महक उठी
फूल-फूल पात-पात
चिड़ियाँ चहक उठीं
कैसा यह संबोधन
छा गया सम्मोहन
जब मेरे सपनों में
तुम मुस्कुराए

अनुत्तरित प्रश्नों का बोझ

मेरे जीवन के
बहुत से अनुत्तरित प्रश्न हैं
जिनके उत्तर दिए बिना ही
तुम सदा के लिए मुझसे दूर चले गए
और एक दिन मैं भी
मन पर इन अनुत्तरित प्रश्नों का बोझ लेकर
तन पर इन अनुत्तरित प्रश्नों की चादर ओढ़कर
कभी न जागने वाली नींद में सो जाऊँगी
काश तुम ने कभी मेरी आँखों में झांककर
उनके शून्य में छिपे
कुछ प्रश्न देखे होते
काश तुम ने मेरे मन के
कोरे कागज पर लिखे
कुछ भाव पढ़े होते
काश तुम मुझसे कुछ पूछ पाते
काश मैं तुमसे कुछ कह पाती
मेरे मस्तिष्क में घुमड़ते ये प्रश्न
मुझे सोने नहीं देते
मेरी आँखों के शून्य
मुझे रोने नहीं देते
काश! बीते पल
कुछ पल के लिए
फिर लौट कर आ जाते
तो शायद
मेरे प्रश्नों के उत्तर मिल जाते

खो गए हैं गीत मेरे

खो गए हैं गीत मेरे
घिर गए हैं हर तरफ बादल घनेरे
बादलों की गर्जना में
चमकती इन बिजलियों की
दिल को दहलाती हुई अनुगूँज में
भावनाओं के ज्वार में
अनुभूतियों की पुकार में
कुंठाओं और विडंबनाओं के
असहनीय बोझ तले
कोई अपने अन्दर कैसे झाँके
कैसे खुद से मिले गले
ख़त्म हो गया अहसास
ख़त्म हो गई जीने की आस
हृदय और मस्तिष्क में
छा गए काले अँधेरे
खो गए हैं गीत मेरे

संबंधों के संदर्भ में

संबंधों के संदर्भ में
संबंधों के तार
सदैव जुड़े रहते हैं
जीवन के अंतिम पड़ाव तक भी
न जाने कब और कैसे कोई संबंध
स्मृतियों के झरोखों में
झाँकने आ जाता है
सपनों में तिर आता है
कभी कभी साकार
साक्षात उपस्थित हो जाता है
क्यों कभी-कभी दुनिया
इतनी छोटी हो जाती है
चाहे अनचाहे अपने पराए
दूर पार के कितने ही नाम
कितने ही चेहरे
स्मृतियों के आकाश में
जब तब टिमटिमा जाते हैं
हम भी जाने अनजाने
उनको बुलाते हैं
और हौले से सहलाते हैं
अदृश्य डोरियों में झूलते ये संबंध
हमारी हर सोच में
कहीं न कहीं शामिल रहते हैं
कभी हँसा कर
कभी रुलाकर
अपने होने का अहसास कराते रहते हैं

हाशिए पर बैठकर

मेरी ज़िंदगी का फैसला
लिख दिया गया
एक हाशिए में
मेरा पूरा वजूद
समेट दिया गया
मेरी ज़िंदगी के सीधे धागों को
इतनी उलझनों के साथ
लपेट दिया गया
क्यों एक भरी पूरी
चैन से जीती शख्सियत को
एक ख़ास उम्र के बाद
उसके अपने ही उसे नकार देना चाहते हैं
उस की पूरी ज़िंदगी के अनुभवों को
दुत्कार देना चाहते हैं
उस की लोरियों, नसीहतों
और कुर्बानियों के बदले उसे मिलता है
घर का सूना कोना
छुपकर, घुटकर रोना
हाशिए पर बैठा दिया गया वह इंसान
हाशिए पर बैठकर कैसे जी पाएगा
इतना जहर कैसे पी पाएगा
शायद यह हाशिया
सबकी ज़िंदगी में आएगा
पर उस वक्त कोई अपनी भूल
सुधार नहीं पाएगा

लक्ष्य की ओर

कहा पथिक से सबने ही
रुक जा, मत जा, ओ! राही
दूर बहुत है मंजिल तेरी
बड़ी कठिन है राहें तेरी
भटक-भटककर क्यों यों -
अपने प्राण गंवाने जाता पगले?
बड़ी कठिन है रीत जगत की
किसने पाया लक्ष्य अरे!
दुर्गम पथ में फँस जाएगा
और निराशा के घेरे में
चक्रव्यूह में धँस जाएगा
हाथ मलेगा, पछतायेगा

नहीं प्राप्त कुछ कर पाएगा
डरा रहे हैं, दबा रहे हैं
भांति-भांति से ये जगवाले
पर क्या रोके कभी किसी के
रुकते जाने वाले?
कभी सूर्य ने अपनी राहों को छोड़ा है
या चंदा ने एक दिवस भी मुँह मोड़ा है
शेषनाग ने कभी भूमि को बोझिल माना

और कभी क्या आसमान ने
छाया रोकी
चाँद सितारों वाली चूनर
अनंत, अथाह, असीम नीलिमा को
त्यागा है?
मैं अपनी मंजिल का राही
है एक लक्ष्य इक पथ मेरा
मैं नहीं निरुत्साहित होता
बिन रुके बढ़ा जाता पथ पर
मेरा पथ निश्चित
अटल भाव
मेरी मंज़िल सम्मुख गोचर
मैं नहीं देखता इधर-उधर
जानते नहीं क्या?
मैं अर्जुन का वंशज हूँ
अगर रोकने से रुक जाते
यों मंजिल पर जाने वाले
बदल चुका होता अब तक क्रम-चक्र धर्म सृष्टि का
अच्छा आज विदा लेता हूँ
लगा रहीं आवाज़ मुझे अब मेरी राहें

रेत के घर का जीवन

ज़िंदगी यूँ ही गुजरती जा रही है
हाथ से पल पल फिसलती जा रही है
रेत के घर सा ये जीवन ढह रहा है
बाढ़ में तिनके सरीखा बह रहा है
ज़िंदगी टुकड़ों में जैसे बँट रही है
कतरा-कतरा ज़िंदगी यूँ कट रही है
ज़िंदगी आकर कहाँ पर रुक गई है
कौन-सी ताकत के आगे झुक गई हैं
ज़िदगी का फलसफा कैसे बताएं
ज़िंदगी से ज़िंदगी कैसे बचाएं

कौन-सी मजबूरी

कभी-कभी ऐसा क्यों होता है
कि अनगिनत अहसास
दिल और दिमाग में
उमड़ घुमडकर शोर करते हैं
लगता है दिल और दिमाग़
इस शोर से फट सकते हैं
चाहती हूँ किसी को सब कुछ बताऊँ
किसी अपने को कुछ दिल की सुनाऊँ
सारे अहसास
कागज़ पर बिखेर दूँ
या कैनवास पर उतार दूँ
पर जैसे सब कुछ थम सा जाता है
हर अहसास होठों पर आने से पहले
कलम की नोक पर उतरने से पहले
केनवास के रंगों में बिखरने से पहले ही
जम-सा जाता है
न जाने कौन-सी मजबूरी
सारे एहसासों को
वापस अन्दर की तरफ मोड़ देती है
एहसासों की यह मौत
मेरे पूरे वजूद को
अन्दर तक तोड़ देती है

रात के अँधेरे

कैसी हैं ये मजबूरियाँ
बढ़ती जा रही हैं दूरियाँ
सब तरफ अंधेरा घुप है
फिर भी हम चुप हैं
कैसे ये हालात हैं
उबलते जज्बात हैं
होंठ फिर भी सिले हैं
चाहे मन में गिले हैं
कह न पाए मन की बात
सुन न पाए उनकी बात
न मंजिलें हैं न रास्ते
जिए हम किस के वास्ते
कैसी यह घुटन है
कैसी यह चुभन है
न शाम है न सवेरे
हैं सिर्फ़ रात के अँधेरे
न रौशनी है न आहटें
हैं सिर्फ़ मजबूरियाँ
सन्नाटे और कराहटें

बिना दस्तक दिए

दर्द के साए
दबे पाँव
न जाने कब
मेरी ज़िंदगी में
प्रवेश कर लेते हैं
दिल के दरवाजे भी
उनके लिए
बिना आहट किए
खुल जाते हैं
मेरे और दर्द के बीच
यह कैसा रिश्ता है
क्यों मेरा दिल
हजारों क़हक़हे लगाते
ढोल-ढमाकों के साथ आते
नाचते गाते सुखों के बीच
बिना दस्तक
बिना आहट के आए
इस मेहमान को
झट से अपने अन्दर
जगह दे देता है
और उसे
अपने अन्दर छुपा कर
उसके साथ
जीता चला जाता है

समष्टि की ओर

स्वत्व को भूल कर भी हम
पूर्णत्व को प्राप्त कर सकते हैं
मैं को भुलाकर ही
परमतत्व को प्राप्त कर सकते हैं
बूँद-बूँद बहता पानी
नदी है बन जाता
नदी का जल
अपना अस्तित्व मिटाकर
सागर है बन जाता
अकेला पत्ता पेड़ नहीं कहलाता
एक व्यक्ति से समाज नहीं बनता
एक पर एक मिलकर ही
समाज है बनता
एकत्व को भूल कर
समष्टि की ओर बढ़ो
नव निर्माण
नव उत्थान
नव अभियान पर बढ़ो

शाम और सुबह

साँझ की बेला सागर के तट पर
एक अकेली चट्टान पर बैठकर
दूर तक फैले इस सागर पर
डूबते सूरज की किरणों द्वारा
सागर की सतह पर बिछाई झिलमिल करती
सुनहरी चादर को देख रही हूँ, जी करता है-
इस लहराती ,सरसराती, जगमगाती
चादर पर लेट कर शांति से सो जाऊँ
दूर कहीं जाकर लहरों में खो जाऊँ
भूल जाऊँ दुनिया के सारे दुख-दर्द
तमाम गिले-शिकवे हवायें गर्म-सर्द
घूरती आँखें माथे के बल
छूटती डोरियाँ टूटते संबल, पर यह क्या
सूरज तो अपनी चादर समेटकर
कहीं दूर चला जा रहा है
सागर पर झिलमिलाती चादर की जगह
काली चादर बिछती जा रही है
काली अँधियारी चादर
मेरी ज़िंदगी की चादर जैसी
फिर जागती है एक नई आस
सूरज तो कल फिर आएगा
अपनी रूपहली, सुनहली, झिलमिल चादर लेकर
एक नई सुबह फिर आयेगी
ज़िंदगी एक बार फिर जगमगाएगी
नए सूरज के साथ एक नई सुबह आएगी

अनजाना सपना

न मैंने कभी तुमको साथी पुकारा
न मैंने कभी तुमसे माँगा सहारा
मगर क्या नहीं था कोई तार ऐसा
किया जैसा तुमने न तुम करते वैसा
हजारों अपरिचित हैं मिलते ही रहते
जो अपने हैं होते वो पहचाने जाते
किसी दिल के तारों को झंकृत करें जो
वो अपने ही होते ना बेगाने भाते
मगर तुम गए तो पलट कर न देखा
वो जीवन का पन्ना उलट कर न देखा
मेरी आँख का दर्द न देख पाए
मेरे दिल की आवाज भी सुन न पाए
न हमने भुलाया, न तुमने बुलाया
न तुमने सुना कुछ, न हमने सुनाया
मेरे मीत ! कैसा ये रिश्ता था अपना
रहा बन के जो एक अनजाना सपना
मिले थे अचानक खिली चांदनी थी
अचानक ही टूटा चमकता सितारा
इशारे की टूटन भी न देख पाए
लगा जैसे टूटा कोई दिल बेचारा
न मैंने कभी तुमको साथी पुकारा
न मैंने कभी तुमसे माँगा सहारा

फिर भेद क्यों है

देखा
अर्धनारीश्वर को
परखा शक्ति और ईश्वर को
अनुभव हुआ
समान रूप से
समान गति से चालित पहियों का
हृदय ने कहा
सचमुच नर-नारी
राधा-कृष्ण
सीता-राम
गौरी-शंकर ही तो हैं
चाँद के बिना चाँदनी नहीं
चाँदनी के बिना चाँद कैसा?
कृष्ण सूर्य है तो सूर्य किरण राधा
राम चाँद तो चाँदनी सीता
जोड़ी में गौरी-शंकर
अर्धनारीश्वर
फिर कैसा भेद है, नर-नारी में
जब भेद नहीं रखा स्वयं त्रिपुरारी ने
कौन बड़ा ? कौन है हेठी ?
एक मन्नतों से माँगा लाडला बेटा
दूसरी अवांछित उपेक्षिता बेटी
जब बहन नहीं तो भाई शब्द में क्या तत्व
राखी और भैया दूज का क्या महत्व

उन दिनों की कसक

मेरी रातों के तुमने जलाए दिये
मेरी रातों के तुमने बुझाए दिये
जब किया दिल तुम्हारा तो तुम आ गए
जब किया दिल तुम्हारा तो तुम चल दिए

एक दिन वो था जब तुम मिले थे हमें
हमने समझा सफर एक पूरा हुआ
मिलकर काटेंगे अब जिंदगी का सफर
मिलकर कर लेंगे जो कुछ अधूरा हुआ
अब तराने खुशी के रहेंगे सदा
अब कोई ग़म न होगा हमारे लिए

मैंने सपनों का संसार था रच लिया
मेरे ख़्वाबों को तुमने ही था सच किया
एक जन्नत थी वो जिस में रहते थे हम
एक दुनिया अलग थी हमारी सनम
अब भी तड़पाती है उन दिनों की कसक
दिन जो हमने कभी साथ में थे जिए

फिर अचानक वो सपने बिखर क्यों गए
जब मिले थे तो हम यूँ बिछड़ क्यों गए
मेरी क्या थी ख़ता किस्मतों के खुदा
जो मिलाया था उसको किया क्यों जुदा
कोई ज़ख्मों पर मरहम लगाता नहीं
ज़ख्म जो भी मिले हमने खुद ही सिये

बीच राहों में क्यों छोड़ा तुमने हमें
अर्श से फर्श पर मोड़ा तुमने हमें
कोई उम्मीद अब न कोई आस है
ज़िंदगी सिर्फ़ इक दर्द की प्यास है
कोई मर मर के तिल-तिल यूँ कैसे जिए
कोई दिन रात कैसे ज़हर ये पिए

जिंदगी की ये राहे बड़ी है कठिन
मरना जितना कठिन जीना उस से कठिन
अँधेरे हैं दिन काली अंधियारी रातें
मुश्किल बड़ा करना जीने की बातें
अब जलाने है मुश्किल सपनों के दिये
टूटे सपनों का विष कोई कैसे पिये

जो गीत तुमने गाए

कभी गीत बनके मेरे जीवन में तुम समाए
कभी प्रीत बनके मेरी सांसों में तुम समाए
संगीत बन के मेरे होठों से गुनगुनाए
कभी अश्रु बनके मेरी आँखों में झिलमिलाए
चंदा की चाँदनी से तन-मन में जगमगाए
सूरज की किरण से तुम आ-आ के मुस्कुराए
जो गीत तुमने मुझको गाकर कभी सुनाएं
हर शब्द उनका मेरी नींदों को है चुराए
हर साँस मेरी बन्धु तुमको है नित बुलाए
जो साथ क्षण बिताए जाते नहीं भुलाए
खुशियों के गीत तुमने जो थे कभी सुनाए
गा-गा के उनको हमने आँसू हैं नित बहाए
अपना बना के मेरे सुखचैन क्यों चुराए
क्यों गीत बनके मेरे जीवन में तुम समाए

मेरा मन बौरा उठता

कुछ भूली बिसरी सी यादें
जब आकर मुझे सताती हैं
फिर जो अतीत में भूल गई हूँ
आकर उसे दिखाती हैं
तब मेरा मन बौरा उठता
कैसे भूलूँ मैं सब कुछ
क्यों ये यादें जब-तब आकर
याद दिलाती है सब कुछ
मेरे बीते दिन क्यों पीछा
नहीं छोड़ते हैं मेरा
मेरे कुंठाग्रस्त हृदय में
क्यों डाले रहते हैं डेरा
जिनको ठुकराती वो आते
बार-बार मेरे आगे
जिनको याद करूँ वो मधुक्षण
मेरे जीवन से भागे
क्या विडंबना है जीवन की
जो भूलूँ वो याद आए
खर्च नहीं क्यों होते
भूली बिसरी यादों के सरमाये

दिलदार मौसम

घुल रही है हवाओं में खुशबू नई
नया कोई सुहाना का मौसम यहाँ
गा रहा गीत गुलशन का हर फूल है
ज़र्रे-ज़र्रे में संगीत बसता यहाँ
दूर से बाँसुरी की धुनें आ रही
जैसे कान्हा की बाजी थी मुरली यहाँ
पास के बाग में पायलें बज रहीं
जैसे नाची थी राधा झनन झन यहाँ
कैसी मस्ती सी छाई हुई हर तरफ
जैसे जन्नत उतर कर है आई यहाँ
कूकती कोयलें, नाचते मोर हैं
जैसे खुशियों में डूबा है सारा जहां
ऐसी खुशियाँ नसीबों में किसके लिखीं
फूल काटों के संग भी हैं हँसते यहाँ
पत्ते-पत्ते को छूकर जो निकली हवा
सरसराहट सी फैली यहाँ और वहां
ऐसे दिलदार मौसम की क्या बात है
हर तरफ फैली खुशियों की सौगात है
जग रही दिल में कोई तमन्ना नई
घुल रही है हवाओं में खुशबू नई

रिश्तो की बाड़

रिश्तो के आस-पास बनी बाड़
बड़ी कच्ची होती है
दिल की नींव बड़ी नाजुक होती है
जरा सा धक्का लगते ही
पूरी बाड़ नींव तक हिल जाती है
बचाते रहना
अपने फलते फूलते
हरे-भरे घर से जुड़े
इन काँच से नाजुक रिश्तों को
कहीं यह बह न जाएँ
आँसुओं के सैलाब में
दिल के हाहाकार में
दिमाग के तूफान में
या भावनाओं के ज्वार में
ऐसा हुआ तो बाड़ टूट जाएगी
टूट जाएंगे सारे किनारे
ढह जायेंगी रिश्तों की दीवारें
बह जाएगा दिलों का प्यार
किरच-किरच बिखर जाएंगे
काँच से नाजुक रिश्ते
इससे पहले कि रिश्तों की बाड़ में
कोई दरार आए
जोड़ लो इसे
प्यार-दुलार-मनुहार की
पक्की सीमेंट से

हौले से रोती है

कभी-कभी जब रात अंधेरी
गहरी काली होती है
दबी सिसकियों से तब क्यों वह
हौले-हौले रोती है
ज़ख्म वही शायद खुल जाते
रात के अँधियारे में
जिन्हें छुपा कर रखती है वह
दिन के उजियारे में
कौन बँधाए धीर उसे
अब कौन उसे समझाए
जिन्हें समझ बैठी थी अपना
वो तो हुए पराए
क्यों अतीत की यादों का
बोझ वह ढोती है
छोड़ गए जो बीच भंवर
कर याद उन्हें क्यों रोती है
भरे अँधेरे काली रातों से
उसके जीवन में
पिरो लिए सारे दुख उसने
जख्मों की सीवन में
उन जख्मों को खोल रात में
आँसुओं से धोती है
खुल न जायें राज हृदय के
हौले से रोती है

निपट अकेली

मेरे आसपास फैला है
बड़ा अजब-सा सन्नाटा
कहाँ गए वो सब जिनके संग
मैंने सुख-दुख था बाँटा
अपने पराए रिश्ते नाते
फिसल गए हाथों से सारे
आज सिर्फ क़ैद मुट्ठी में
कुछ तूफान वक्त के मारे
कैसे ये तूफान वक्त के
बहा दिए जीवन के पल छिन
निपट अकेली शक्तिहीन सी
मैं जीती हूँ तारे गिन-गिन
नहीं जानती कितना पाया
या खाया है कितना घाटा
मेरे आसपास फैला है
बड़ा अजब-सा ये सन्नाटा

कुछ हमारी सुनिये

सीधी बात कभी न बोले सदा इमरती रहे बनाता
मेरी मानो ऐसे मानुष से रखो कभी न कोई नाता
रखो कभी न नाता उससे एक हाथ दूर ही रहना
अधिक पास हो गए तो एक दिन याद करोगे मेरा कहना

अपना समझा था जिन्हें कर बैठे वो द्रोह
शत्रु अगर ऐसा करें तो न आवे छोह
तो ना आवे छोह मित्र का धोखा तीखा
अपने मारें फूल लगे काँटों से तीखा

शूल बन गए फूल जो तुमने मारे
मित्र से शत्रु बनकर दिन में दिखाए तारे
दिखा दिये तारे हमें विश्वास न होता
जो तेरे हाथों खाया होता हमने न धोखा

जब छोटे थे तब तो हमको सभी थे लगते अपने
पर जब बड़े हुए तो पाया वे सब तो थे सपने
वे सब तो थे सपने जिन्होंने दु:ख के समय मुँह मोड़ा
जाने कौन है अपना किसने मुँह पे नकाब है ओढा

गीली आँखों से

गीली आँखों से
एक दिवस तुमको
था विदा किया
अब आ जाओ
है कसक रहा
मेरा पागल सा जिया
अब तो आ जाओ
क्या याद तुम्हें
कितने मौसम आए
बीते कितने बरस
मगर तुम न आए
क्या जानो तुम
मैंने पल-पल
कैसे काटा
कैसे सारी पीड़ा को
पी-पीकर
भर लिया हृदय में सन्नाटा
अब नहीं सहा जाता
मानस के मीत
समझ कर
मेरे मन की प्रीत
आओ आकर मेरी
गीली आँखों को
हँसना मुस्काना दे जाओ
अब आ जाओ

एक बार सुलझा दे

कुछ प्रश्न हृदय में लिए
मस्तिष्क में उलझनें भरकर
कभी जब मैं
तेरे सम्मुख आऊँ
एक- एक प्रश्न का उत्तर
तुझ से लेकर
अपनी जिज्ञासा दूर करूं
कितने ही आधे और अधूरे
उलझे अनसुलझे प्रश्न
तेरे उत्तर से अगर
सुलझ जाएँ तो शायद
मेरे जीवन की कुछ गाँठें
खुल जायें
जीवन शायद फिर एकबार
चल पड़े
एक सीधे पथ पर
आ एक बार सुलझा दे
मेरे जीवन की
उलझी गाँठें
कुछ तू मुझको
समझा बन्धु
जब मन की व्यथा सुनाऊँ
कुछ प्रश्न हृदय में भरे
उन्हें सुलझाऊँ

रोटी के चक्कर में

रोटियों ने दिखा दिए तारे दिन में
रोटियों ने उन्हें भी रावण बना दिया
खुद राम बसा करते थे जिन में
रोटी आदत नहीं जरूरत होती है
भूखे के लिए रोटी
भगवान की मूरत होती है
भूखे को चाँद भी
रोटी सा दिखता है
रोटी के लिए इंसान का
जमीर तक बिकता है
रोटी पर वह लिखे गए बहुत से गाने
रोटी इंसान को खेल खिलायें मनमाने
रोटी के चक्कर में
खत्म हो जाती हैं जिंदगानियाँ
फिर भी कभी खत्म नहीं होतीं
रोटी की कहानियाँ
बिक जाती हैं बेटियाँ और बोटियाँ
खरीदने में रोटियाँ
आदमी रह जाता है
तेरह में न तीन में
रोटियों ने दिखा दिए
तारे दिन में

मैंने अपने गीतों में

मैंने अपने गीतों में
खुद को ही ढाला है
मेरा हर गीत मेरे दिल का
एक पका हुआ छाला है

जो फूट पड़ा है बाहर
जब भावनाओं ने मारा है
शायद इस जग की
वक्र दृष्टि में एक मसाला है

जीनाभीहैमुश्किल-मुश्किल
मरना भी नहीं आसान
जीवन मानों गले के अन्दर
फँसा हुआ निवाला है

हर राह में अटके कांटे
आँखों में अँधियारे हैं
पग-पग पर लगती ठोकर
साँसों में घुली हाला है

मैं कभी पूछती हूँ खुद से
कभी खुदा से रो कर कहती
क्यों घिरे हैं काले बादल
खोया क्यों उजाला है

क्या नारी होना

जब भी दिल में कुछ प्रश्न उठे
दिल ने कहा
कुछ नहीं पूछना
जब दिल ने कुछ सोचना चाहा
दिल ने कहा
कुछ नहीं सोचना
क्योंकि सोचने से प्रश्न उठेंगे
कहना, पूछना, सोचना
सब छोड़ दिया
कभी माता-पिता की खातिर
कभी पति और बच्चों की खातिर
पर एक प्रश्न दिल से नहीं निकलता
हर समय है कचोटता
क्या बेटी पत्नी और मां होना
अर्थात्
क्या नारी होना इतना बड़ा अभिशाप है
जिसका कोई स्वत्व
कोई अस्तित्व नहीं होता
जिसके पास सिर्फ़ एक प्रश्न होता है
जिसमें जीवन भर
वह स्वयं घुटती रहती है
मैं कौन हूँ?
मैं कौन हूँ?

जब एक याद

कुछ यादें तुम भूल गए
कुछ हमसे कहीं भुलाने को
पर ज़ख्म लगे जो छोड़ गए
क्या काफी नहीं रुलाने को
कहते हैं समय भर देता है
जो ज़ख्म लगे हों हमें कभी
ज़ख्मों के निशां जो बचे रहे
क्या मिटा सकेगा समय कभी
पल-पल वो निशां जब देखेंगे
काफी हैं याद दिलाने को

मन के अन्दर के कोने में
जब एक याद बस जाती है
तो अंतर की नस-नस में जैसे
मेहँदी-सी रच जाती है
फिर और कहीं कोई मूरत
मन को तो नहीं जँच पाती है
क्या उस मेहँदी की लाली ही
काफी है नहीं जलाने को ?

यादों के दीपक बुझ जाएँ
कहना है बड़ा आसान बन्धु
पूरा जीवन जल जाता है
यादों के दीप बुझाने को

एक दिन अपने लिए

आओ मित्र
आज का दिन लिख लें सिर्फ अपने नाम
अपने लिए
भूल जाएं सारी अनुभूतियाँ और अहसास
सुख- दुख, हर्ष-विषाद
अपने-पराये जो भी दिल में समाए
कोई कहीं से हमारी यादों में न आए
इस एक दिन के पल-पल को
समेट कर बंद कर ले अपनी मुट्ठियों में
इस दिन का हर पल भर जाये
जीवन को खुशियों से
भुला दे अतीत को
सोचें न कुछ भविष्य के लिए
आज करना है अन्वेषण
अपने जीवन के सत्य के लिए
इस एक दिन में हम, जी लें पूरी जिंदगी
यह एक दिन काफी होगा, जीने को पूरी जिंदगी
सत्य करना उन स्वप्नों को
जो आज के दिन जिये
आओ लिख लें आज का दिन
सिर्फ अपने लिए

यादों के रेले

बैठे हैं अकेले में
यादों के मेले में
दिल में, दिमाग में
यादों के कोने हैं
हर कोने में छुपे बैठे
घबराए मृगछौने हैं
जरा-सी आहट से
थोड़ा-सा आहत हो
निकल कर आ जाते
दिल से, दिमाग से
कभी हँसते शरारत से
कभी कुछ याद करते, हिकारत से
कभी झुरमुट से झाँक-झाँक
आते हैं, रुलाते हैं
कभी अतीत की गलियों से
बार-बार बुलाते हैं
क्षण-क्षण बदलते हैं
कभी रूठते , कभी मचलते हैं
मेले का तमाशा दिखाते हैं
यादों के पल-छिन
चलचित्र से घूम जाते हैं आँखों में
जीवन के सब दिन
चाहे हम अकेले हैं
चाहे हैं मेले में
साथ रहते हमेशा
यादों के रेले हैं

हवायें पहाड़ की

सर-सर-सर सरसराईं
छू गईं तन-मन
कानों में बन गुनगुनाईं
प्यारी सी मीठी धुन
लटें बिखराकर उड़ीं
खिलखिलाकर दूर गईं
ठंडी सी झुरझुरी दे
अन्तस् तक सिहरा गईं
ऐसी इठलाकर आईं
पात-पात चहक गया
ऐसी उमग कर आईं
फूल-फूल महक गया
वादियों तक घूम-घूम
लाईं कुछ कहानियाँ
नदिया से, कानन से
लाईं कुछ निशानियां
देख नए अतिथि को
कर गईं अठखेलियाँ
कल-कल कर नदिया सी
करती हैं केलियाँ
विहँस-विहँस, झूम-झूम
करतीं रंगरेलियाँ
मुस्कुराई खिलखिलाईं
बनकर अलबेलियाँ
गलबहियाँ डाल गईं
कनबतियाँ कर गईं
अंग-अंग छू गईं
नटखट हवायें पहाड़ की
तन मन सरसा गईं
हवायें पहाड़ की

शायद किसी दिन

घर
एक घोंसला
जिसमें चिड़िया
अपने बच्चों को
अपने पंखों में समेट कर
पाल-पोसकर बड़ा करती है
उड़ने के लिए पंख देती है
और पंख लगते ही
बच्चे अपनी उड़ान भर कर
अपना नया संसार बसाने के लिए
उड़ जाते हैं
और वह घर
एक मकान बनकर वह जाता है
हाँ, उस मकान में
एक बूढ़ी माँ अभी भी
इस आस में जीती है
शायद किसी दिन यह मकान
फिर घर बन जाये

कुछ दिन के लिए

कुछ उलझनें हैं जीवन में
आकर सुलझाओ
ज़िंदगी कुछ दिन के लिए
मेरे घर आओ
कहते हैं
किसी को मारना गुनाह है
पर मर-मर के जीना भी तो पाप है
दिन में सौ-सौ बार
उसूलों का बलिदान
आत्मा का हनन
मुख पर चाँदनी का मुखौटा
अन्दर ग्रहण भी तो आत्मघात है
जहाँ जीने और मरने के बीच
कोई अंतर नहीं
ऐसा जीवन भी तो श्राप है
मुझे जीने की परिभाषा सिखाओ
कोई सुपथ कोई आशा दिखाओ
अँधेरों से प्रकाश की ओर ले जाओ
उलझनों से दूर
एक स्वच्छंद आकाश की ओर ले जाओ
मुझे जीवन का पाठ पढ़ाओ
ज़िंदगी
कुछ दिन के लिए
मेरे घर आओ

निर्णय भी एक हो

किसी को छोड़ दिया
किसी को पकड़ लिया
किसी को ढील दी
किसी को जकड़ लिया
एक ही जुर्म की
दो तरह की सज़ा क्यों
न्याय के फैसले
न्याय से होते रहें
न्याय के अन्याय से
लोग न रोते रहें
अमीर या गरीब हो
नेता या अभिनेता हो
भगवान तो सबका एक है
वह बराबर ही देता है
फिर क्यों न्याय को अन्याय में
अन्याय को न्याय में मोड़ दिया
यह किसने न्याय की देवी को
अन्याय से जोड़ दिया
अपराध अगर एक है
तो निर्णय भी एक हो
निर्णय भी सही होगा
इरादा अगर नेक हो

खेलती रही जिंदगी

आँखों में कुछ सपने
दिल में कुछ अपने
ज़िंदगी की चाल पर
हम भी लगे चलने
वक्त चलता गया
रंग बदलता गया
अपने लगे लूटने
सपने लगे टूटने
ज़िंदगी की आग में
हम भी लगे जलने
खेलती रही ज़िंदगी
खिलाती रही ज़िंदगी
जलाती रही ज़िंदगी
इस तरह दिन ज़िंदगी के
मोम से लगे गलने
ज़िंदगी जैसे पालती गई
हम भी लगे पलने
ज़िंदगी की चाल पर
हम भी लगे चलने

हृदयदुर्ग के द्वार पर

हृदयदुर्ग की रक्षा के लिए
बना लीं कुछ सीमाएं
खींच लीं कुछ रेखाएं
फिर जब जब हुआ हृदयदुर्ग पर प्रहार
नहीं मानी हार बंद कर लिए द्वार
बचा लिया हृदयदुर्ग को
कुछ कठिन परिस्थितियों से
पर ताजी हवा तो आ नहीं सकती
बंद द्वार या भित्तियों से
न प्रवेश कर पाएगी कोई नेह भरी गर्मी
न छू पाएगी प्यार की नर्मी
वक्त आया था चला गया
वक्त के हाथों कौन नहीं छला गया
खोल दो बंद दुर्ग के बंद दरवाजे
देखो कुछ रिश्ते दे रहे हैं दस्तक
आ रही हैं कुछ मीठी आवाज़ें
अपना लो फिर से अपनों को
हृदय में फिर से प्रवेश दो
अपने उन सपनों को
जो रह गए थे अधूरे
आज तोड़ कर अपने बनाए घेरों को
खोलकर द्वार, भगा दो अँधेरों को
नए पुराने सभी सपने
हो जाएंगे पूरे

अस्तित्वहीनता का बोध

यह कैसी अस्तित्वहीनता का बोध
दिन रात मुझे कौंचता है
करना कुछ और पड़ता है
मन कुछ और सोचता है
उम्र के जिस चौराहे पर
मैं विस्फारित नेत्रों से
दिग्भ्रांत, दिग्भ्रमित सी खड़ी हूँ
शायद चौराहे की कोई सड़क
किसी मंजिल तक नहीं जाती
आज जब उसके सारे शत्रु
एक-एक करके हाथ मिलाते जा रहे हैं
शरीर के एक-एक अंग पर
हो रहे हैं आक्रमण
अंग-अंग सिर झुका रहा है
आक्रामकों के सम्मुख
हो रहा है नित नए शत्रुओं का आगमन
ऐसे में सारे तथाकथित अपने भी
काई से फटते जा रहे हैं
मुझे इस चौराहे पर छोड़ कर
तैयार हैं जाने को
हां, मैं भी तैयार हूँ
जीवन भर के अस्तित्व को
अस्तित्वहीन बनाने को
मानना है विधि के विधान को

विदेह

जीवन के कुछ विशेष वर्षों के पश्चात
कुछ विशेष सीमाएं निर्धारित करना
जीवन के लिए आवश्यक हो जाता है
क्योंकि पिछले साठ वर्षों का सारा ज्ञान
षष्ठीपूर्ति के बाद अनावश्यक हो जाता है
अपने हँसने खिलखिलाने पर
रोने पर, मुस्कुराने पर
पीने पर, खाने पर, विशेषत: खांसने पर
आने और जाने पर सोने और जागने पर
यहाँ तक कि अपने बनाए घर के
कमरों की हदों पर भी अंकुश रखना चाहिए
स्वचालित यंत्र-तंत्र से
स्वयं को नई पीढ़ी के रंग-ढंग में
उनके जरूरतों के अनुसार
मूक सहमति देकर ढालना चाहिए
अपने अनुभवों से सीख देना
भूल जाना चाहिए
आँख, कान, जीभ, मस्तिष्क
बंद करके जीना चाहिए
विष को भी अमृत समझकर पीना चाहिए
देह रहते विदेह हो जाना
जरूरी है सुखी जीवन के लिए
कुछ नया सीखना जरूरी है
एक खास उम्र में जीने के लिए

साँसों का सफर

जब तक चलेगा यह साँसों का सफर
रिश्तों में बंधा रहेगा हर बशर
यह रिश्ते तो खुदा के घर से बन कर आए हैं
ये भी वही जाने कौन अपने कौन पराये हैं
रिश्तों की डोरी से इंसान बंधा रहता है
जैसे भी हों रिश्ते उनके सितम सहता है
रिश्तों की डोर कभी पक्की कभी कच्ची है
समय के साथ कभी झूठी कभी सच्ची है
फिर भी जब तक सांस तब तक आस की तर्ज पर
रिश्तों का लेप लगा रहता है इंसान के हर मर्ज पर
नाखूनों से मांस जुदा नहीं होता है कहकर
चलाता रहता है रिश्तों का यह सफ़र
जब तक जियेगा रिश्ते निभाएगा
फिर एक दिन साँसों के साथ
यह सफ़र खत्म हो जाएगा

एक सम्बल हो तुम्हीं

नेह के दीपक जलाए हमने जो अंत:करण में
क्या कभी उनको बुझा सकते हैं तेरे विस्मरण में
मैं हूँ बाती और तुम हो स्नेह इस दीपक के बंधु
बिना तुम्हारे कैसे चमके मेरे माथे का ये इन्दु
मैं तुम्हारा नाम लेकर पार कर लूं सारे सागर
याद जब कर लूँ तुम्हें भर जाए मेरे मन की गागर
तुम ही नैया ,तुम खिवैया, ज्योति तुम मेरे नयन में
एक ही आधार हो सम्बल हो तुम जीवन -मरण में
एक तुम ही आस हो विश्वास मेरे एक तुम ही
राग तुम अनुराग तुम हो, प्राण तुम वरदान तुम ही
एक ही जो नाम रहता
हृदय में आठों प्रहर है
चमकता जो भाग्य के नीले गगन में
नींद में और जागरण में
नेह के दीपक सदा जलते हैं
इस अंत:करण में

अम्बर के तारे

कितने राज़ छिपाये दिल में चम-चम-चमका करते तारे
सीने में सुख-दु:ख लिपटाये दम-दम-दमका करते तारे
कहते हैं अपने ही प्यारे
जाकर बन जाते हैं तारे
दे आशीष दुआ करते हैं
सदा सुखी हो मेरे प्यारे
उनकी आशीषों को पाकर
खुशियाँ आतीं सबके द्वारे
सुख दुख में उनके प्यारे भी
आँसू भरकर उन्हें पुकारें
सुख में दुख में हर मौके पर
उनका साथ निभाते तारे
पर दुनिया का चलन यही है
सुख-दुख तो आते जाते हैं
सुख के दिन जल्दी कटते फिर
दुख के लंबे दिन आते हैं
अपनों के दुख देख देखकर
तारों का दिल भर आता है
दर्द हृदय में अपनों के भर
तारा ग़म से फट जाता है
देख टूटते तारे को
मानव जो भी अभिलाषा करता
तारा टूट धरती पर गिरता
धरा पे मिलेंगे अपने प्यारे
यूँ अपनों से मिलने आते
दुख में वो अम्बर के तारे

जा रहे भगवान भास्कर

जा रहे भगवान भास्कर
काम अपने पूर्ण कर कर
चाँद तारों को भगाकर
दूर कर सारा अँधेरा
लाए थे स्वर्णिम सवेरा
सबमें नवजीवन भरा था
काम में हर जन लगा था
कार्य निश्चित जो किया था
पूर्ण करते रहे दिन भर
जा रहे अब घर प्रभाकर

आए सब जन काम करके
खग विहग भी घर को लौटे
तह लगा चादर किरण की
काम सूरज ने समेटे
शांत जा कर बैठे रथ पर
सबको सुख देते खुद जलकर
जा रहे भगवान भास्कर

सौंप कर चंदा को सब कुछ
साथ दे तारों की सेना
राज्य अपना दान कर के
चल दिया सूरज अकेला
सीख लें सूरज से हम
कैसे करें सब काम पूरा
छोड़ कुछ भी न अधूरा
रंग से भर-भर के अम्बर
जा रहे भगवान भास्कर

अनुभवों की गूँज

संसार से मिले
मीठे, तीते , तीखे , कड़वे
स्नेह, प्रेम,प्यार, घृणा, भय से मिले
हर रंग के रिश्तों से मिले
हर तरह के अनुभवों का भंडार
जिनकी अनुगूंज समय-समय पर
गूँजती है मेरे कर्णरंध्रों में
लगता है यह अनुगूँज
गूँज-गूँज कर मुझे बहरा बना देगी
कैसे कैसे अनुभवों से गुज़रकर
पहुँचते हैं उम्र के अगले पड़ाव पर
वही अनुभव जब जब याद आते हैं तो
कभी अंतर में घृणा भी भरते हैं
तो कभी हँसाते हैं, कभी रुलाते हैं
कभी भयभीत करके पत्थर बना देते हैं
कैसी अजीब होती है अनुभवों की यादों की यह गूँज
जब तब अनुभवों से उपजी यह गूँज
मुझसे पूछती है
किस अनुभव से क्या खोया क्या पाया
हर अनुभव बनाता गया एक कहानी
हर कहानी की अनुगूँज याद दिलाती है
उससे जुड़े अनुभव की
वे अनुभव जो जीवन में कभी खुद से
और कभी संसार से मिले

दोस्ती का रिश्ता

दोस्त अपने दोस्त को धोखा कभी न देना
विश्वासघाती सुनने का मौका न खुद को देना
दोस्ती का रिश्ता जग में होता सबसे न्यारा
अपनों से बढ़कर अपना अपनों से बढ़कर प्यारा
बंधन बड़ा अनोखा है बांधे रहना कस के
आपस की उलझनों को सुलझाते रहना हँस के
विश्वास की नींवों को हिलने कभी न देना
न नाम दोस्ती का बदनाम होने देना
ग़र भूल से भी मन में कोई सवाल आए
तो भूलकर बुराई , अच्छाई याद करना
प्रेम ईमानदारी और विश्वास
दोस्ती के आधार हैं दोस्त
एक अच्छे -सच्चे दोस्त के बिना
जीवन निराधार है दोस्त
दुनिया में यूँ तो होता हर इंसान प्यारा
पर दोस्ती का रिश्ता होता है सबसे न्यारा

गम का पुल

ग़म हमने सहा
ग़म तुमने सहा
ग़म का पुल ही जोड़े है हमें
मर मर के जिए
जी-जी के मरे
जीने का ये ग़म तोड़े है हमें
दुनिया के ताने सहते गए
दिल को हैं छलनी करते गए
जो तुमने सहा, जो हमने सहा
आँसू की क़लम से लिखते गए
तुम ग़म की कहानी कहते गए
हम दर्द की मूरत बनते गए
दुनियाँ से करें काहे का गिला
हम अपने ही हाथों मरते गए
अब हमने किया खुद से वादा
यूँ टूटने तुमको न देंगे कभी
दुनिया रूठे तो रूठा करें
हम तुमको न रूठने देंगे कभी
पूरा करना है वादा हमें
इक ये ही तड़प मोड़े है हमें
ग़म हमने सहा
ग़म तुमने सहा
ग़म का पुल ही जोड़े है हमें

यादों की रेखा

ज़िंदगी में बहुत से लोगों से मुलाकात होती है
बहुत से लोगों से बात भी होती है
कुछ शक्लें याद रहती हैं
कुछ नाम भी याद रहते हैं
परन्तु कुछ लोग ही ऐसे होते हैं
जिनके आचार-विचार
व्यवहार, संस्कार
बात करने का सलीका
रहने का तरीका
सहृदयता, उदारता
करते हैं हमें आकर्षित
जिनसे एक बार फिर मिलने के लिए
हम हो उठते हैं व्यथित
जिनकी यादों की रेखा
दिल और दिमाग में खिंच जाती है
इतनी गहरी कि याद आते ही
हृदय से आवाज आती है
काश! वे लोग एक बार फिर मिलते
काश! हम उनसे कुछ सीख पाते
काश! उनसे होती रहतीं मुलाकातें

आओ दिल उदास है

आ जाओ एक पल के लिए
दिल उदास है
इक झलक तो दिखाओ
मेरा दिल उदास है
सदियों से दिल की प्यास
अधूरी रही मेरी
दो बूँद नेह जल की मिलें
दिल उदास है
आ जाओ कभी सपनों की
अँधियारी रात में
कुछ रौशनी जीवन को मिले
दिल उदास है
जीवन में गिले-शिकवे तो
नई बात हैं नहीं
सब भूल कर आ जाओ
मेरा दिल उदास है
कुछ क़दम हम चलेंगे
कुछ क़दम बढ़ाओ तुम
सब दूरियाँ मिट जायें
आओ दिल उदास है

खुद से बेगाने रहे

ज़िंदा रहते हुए भी ज़िंदगी से अनजाने रहे
खुद होते हुए भी खुद से बेगाने रहे
अजब खेल खेलती रही जिंदगी हमसे
हम दीवाने नहीं थे फिर भी दीवाने रहे
शमां के जलने पर परवाने भी जलते हैं
दिलजले दिल में भी पलते रहते हैं अहसास
ये अलग बात है कभी गलते हैं कभी पिघलते हैं
वो दिल ही क्या जिसमें नहीं हों दर्द की लहरें
वो इंसान ही क्या जिस पर नहीं हों सर्द से पहरे
लहरों और पहरों से निकल जाता है जो इंसान
वही ढूँढ लाता है हीरे, डूबकर समंदर गहरे
वीरानियों में डूबते रहे दिल के कहने से
आँखों को रोकते रहे आँसू बहाने से
राज़-ए-ज़िंदगी, न कह पाए, न सह पाए
दिल की तिज़ोरी में छिपाए रहे गहने से

अतीत के पन्नों से

क्यों अतीत के पन्नों से
यादें झाँकने आ जाती हैं
बार-बार ये यादें खोलने लगती हैं
बीते वक्त के वो पन्ने
जिनकी स्याही को
मेरी आँखों से निकली गंगा-जमुना भी न धो पायी
जिन पर लिखे काले अक्षर
जब भी मेरी आँखों के सामने नाचते हैं
तब सुन्न हो जाती हैं, दिल और दिमाग की नसें
वही यादें जिनके कारण मैं कभी चैन से न सो पायी
क्यों आ जाती हैं मेरे वर्तमान को डरावना बनाने
क्यों आ जाती हैं मेरे धीरज की हद आँकने
वो बीता अतीत जब एक बार फिर
मेरा नया जन्म हुआ था
माता-पिता की स्नेह भरी छत्रछाया
पहले घर में छूट गई
मिला नया घर, नये लोग
और तभी लिखे गए वो पन्ने
जो आज के पन्नों को प्रभावित करने
आज भी आ जाते हैं
बरसों बाद भी जो सताने आ जाते हैं
अतीत के पन्नों पर लिखे गए वो फ़रमान

कहीं अनजाने में

रिश्तो की उलझी गाँठों को
इतना न उलझा देना के टूट जायें
अपनों से इतना दूर न होना कि रूठ जायें
बरसों के बंधन पलभर में टूट जायें
दिलों में छालों को न पड़ने देना
जो जरा-सी ठेस लगते ही फूट जायें
आपस में फूट न पड़ने देना
कहीं बाहर के लुटेरे तुम्हें लूट न जायें
स्नेह की रेशमी डोरियों को
स्नेह से बाँध कर रखना
कहीं हाथ कमज़ोर होते ही छूट न जायें
गलत फ़हमियों के समंदर से ज़िंदगी को बचाना
कहीं अनजाने में ज़िंदगी उसमें डूब न जाये
झूठ और अविश्वास को
रिश्तों के बीच न आने देना
कहीं भूल से ज़िंदगी एक झूठ बनकर न रह जाये
कहीं अनजाने में ज़िंदगी उलझती न चली जाये

आजकल उल्लू

एक दिन कहीं पढ़ा
हर शाख पर उल्लू बैठे हैं
मैंने कभी उल्लू नहीं देखे थे
भागकर बाग में पहुंचा
किसी पेड़ की शाखाओं पर उल्लू नहीं थे
एक सज्जन से पूछा-
महोदय, उल्लू इस पेड़ पर बैठे हैं?
उन्होंने कहा-
आजकल उल्लू पेड़ों की शाखाओं पर नहीं
सुरक्षाकर्मियों से घिरे महलों में
अपने सुरक्षित महलों के उपवन में
पुलिस से घिरे दफ्तरों की कुर्सियों पर
या बुलेट-प्रूफ वातानुकूलित गाड़ियों में
ड्राइवरों के पीछे बैठते हैं
अब आप ही बतायें-
अंजाम-ए- गुलिस्तां क्या होगा

चट्टानों से सर टकरातीं

किस से मिलने आती लहरें, उछल-उछल सागर के तट पर
सिर टकरातीं आकर तट से, उबल-उबलकर ,लिपट-लिपटकर
कोसों दूर-दूर से आतीं, किसकी यादें दिल में भरकर
तट पर आकर फिर मुड जातीं, टूट-टूटकर, बिखर-बिखरकर
कौन संदेसा कहने आतीं, क्यों मुड जातीं आँसू भर कर
शायद कोई देख न ले, उनकी आँखों से बहते निर्झर
तूफानों से, भरे हृदय से, चट्टानों से सिर टकरातीं
जैसे कोई गुनाह समेटे, पछताकर खुद को तड़पातीं
कुछ क्षण बाद पलटकर आतीं, कैसी इठलाती बलखातीं
बलखाती लहरों को तक कर, कहें लोग उफ क्यों रुक जातीं
ये अनादि काल से आतीं, जातीं रहतीं भटक-भटककर
शायद कुछ कहने को आतीं, रह जातीं हैं अटक-अटककर
कितने जख्म छिपाए दिल में, रह जातीं हैं सिमट-सिमटकर
सिर टकरातीं आकर तट से, उबल-उबलकर, लिपट-लिपटकर
किस से मिलने आती लहरें, उछल-उछल सागर के तट पर

चाहे मेरी आवाज नहीं

कागज़ तो कोरा ही था
मैंने जाने क्या लिख डाला
था भरा हुआ जो अंतर में
उससे ही कागज़ भर डाला

कागज़ तो कुछ भी न बोला
मैंने ही क्या-क्या कह डाला
मेरे मन से जो ग़म निकला
उसने चुपके से सह डाला

मैंने जीवन की आस -प्यास
सब कागज़ को ही दिखा डाली
कागज़ ने भी व्यथा मेरी
अपनी छाती में छिपा डाली

जब आँखों में आँसू आए
मैंने न किसी को दिखलाये
चुपके से गले लगा उसको
उसपर ही अश्रु गिरा डाला

अश्रु को देखा हो गया व्यथित
बोला पीड़ा से हो विचलित
जो कहना मुझसे कह डालो
अंतर में पीड़ा मत पालो

मेरी आवाज़ नहीं तो क्या
पर तेरा सुख-दु:ख मेरा है
मेरे अंतर में बसा हुआ
प्रिय बन्धु तुम्हारा चेहरा है

कैसी जंग

एक दिन ग़ज़ब हो गया
मामला कुछ अजब हो गया
हो गई लड़ाई
खुदा और भगवान की
दोनों को फिक्र थी
अपनी-अपनी शान की
दोनों अपने को ऊँचा बताने के लिए
खा रहे थे कसम
अपने-अपने ईमान की
दोनों में से कोई कम न था
लगा दी बाज़ी जान की
अरे!
दोनों ने यह क्या किया
दोनों ने खून का दरिया बहा दिया
इस लाल दरिया में से
खुदा और भगवान का खून
अलग कैसे छाँटा जाये
दोनों का हिस्सा
अलग कैसे बाँटा जाये
ये तो बिल्कुल एक रंग है
फिर दोनों के बीच
ये कैसी जंग है?

सच्ची लगन

बन्धु पकड़ कर हाथ
चलेंगे साथ
मार्ग चाहे जितना हो कठिन
बीत जाएंगे ये दुर्दिन
बना लेंगे राहें अपनी
सलामत हैं बाहें अपनी
चल पड़े अगर लक्ष्य की ओर
स्वयं पथ होगा तेरी ओर
रास्ते हों कितने दुश्वार
कभी न मानेंगे हम हार
अगर मन में हो सच्ची लगन
खत्म होगी इक दिन भटकन
राह में आयें कष्ट हज़ार
बन्धु तुम छोड़ न देना साथ
हमारे साहस के सम्मुख
झुकाना होगा विधि को माथ

सिर्फ इन्सान होते

काश! दुनिया में
जाति, धर्म, ऊँच, नीच
अमीर, ग़रीब बाँटनेवाले सामान न होते
तो शायद हम सिर्फ इन्सान होते
कोई अलग-अलग भाषाओं में बँट जाता है
कोई नई-नई परिभाषाओं में बँट जाता है
कोई धरती पर बनाई
अनदेखी सीमाओं में बँट जाता है
कैसे इन्सान खुद ही
टुकड़ों में बँट जाता है
दुनिया बनाने वाले ने
एक दुनिया बनाई थी
यहाँ हर इन्सान ने
अपनी एक अलग दुनिया बना रखी है
झूठे गर्व और अहम् में डूबकर
अपने चारों तरफ एक आग सी जला रखी है
जब सब कुछ इतना बदरंग है
तो सबका खून क्यों एक रंग है
काश !
हमें लूटने वाले
कुछ हैवान न होते
तो हम सिर्फ़ इन्सान होते

अस्मिता को देश की

हाय ! यह क्या हो रहा है देश में
घूमते दानव मनुज के वेश में
आग-सी इक लग रही है हर तरफ
स्वार्थ की लपटें धधकतीं हर तरफ
एक जंगलराज सा है हो रहा
प्रजातंत्र भी सिर पकड़कर रो रहा
लूट, डकैती, बलात्कार और अपहरण
जो कराते उनके हैं धुलते चरण
कलम को भी बेच डाला स्वार्थ में
कहते क्या मिलता हमें परमार्थ में
सोच पर हैं पड़ गए ताले यहाँ
नर्क में क्यों चल पड़ा सारा जहां
ईमान-ओ-धर्म बेचकर सब खा रहे
कौन-सी राहों पे ये सब जा रहे
काश आ जायें कहीं से देवता कोई यहाँ
जो बचा ले अस्मिता को देश की
काश फिर से स्वर्ग बन जाये मेरा हिन्दोस्तां
मैं बनूँ बुलबुल स्वर्ग से देश की

मसले सुलझाने होंगे

लग रहीं हैं भाई-भाई की आवाजें
कभी खुलते हैं कभी बंद होते हैं दरवाजे
कभी लगता है घाव भर गए
कभी लगते हैं ताज़े
मसले पुराने हैं, दोनों तरफ चट्टानें हैं
बहुत से चक्कर हैं, बड़ी कड़ी टक्कर है
उलट-पलट होती हैं बिसात की गोटियाँ
पल-पल बदलती हैं समीकरण की नीतियाँ
भूलना भी मुश्किल, भुलाना भी मुश्किल
समय के साथ खुद को चलाना भी मुश्किल

वक्त के साथ-साथ लाना पड़ेगा सोच में बदलाव
वक्त ही भरता है वक्त के दिये घाव
अगर शान्ति से जीना है तो मसले सुलझाने होंगे
दिलों में विश्वास के दीपक जलाने होंगे
प्यार और विश्वास से घाव भर जायेंगे
दोनों भाई एक-दूसरे की छाँव बन जायेंगे

जीवन का गणित

जीवन है सुख-दु:ख का योग
कहीं मिलन है कहीं वियोग
पल आता है, पल जाता है
पलभर में पल छोड़ के पल को
दूर कहीं गुम हो जाता है
पलभर में जो पल बिछड़ा
वह नहीं लौटकर फिर आता है
चाहे कितने यत्न करें
वह तो अदृश्य में छुप जाता है
चले गए सुख के पल जैसे
दु:ख के पल भी चले जायेंगे
यह सब तो कर्मों का भोग
पल में हँसते पल में रोते
दु:ख में रोते सुख में रोते
रोते आँसू, हँसते आँसू
कैसे विधि ने बना दिया है
सुख-दु:ख का अदभुत संयोग
कोई बिछड़ा कोई मिल गया
कोई रूठ कर तोड़ दिल गया
कहीं गरीबी दुखी कर रही ,
कहीं अमीरी बोती काँटे
सुख-दु:ख की है क्या परिभाषा
किसे लाभ है, किसको घाटे
जीवन में क्या खोया-पाया
जमा घटा का कैसा रोग
जीवन के इस गणित में उलझे
रहते हैं जीवन भर लोग
जीवन है सुख-दु:ख का योग

पुराने गलियारों की आवाजें

बुलाने लगे मुस्कुराकर मुझे
वो बीते क्षण अतीत की उन गलियों में
जिन्हें हम छोड़ आए थे सदा के लिए
वहाँ वापिस न जाने के वायदे थे खुद से कर लिए
लेकिन यह अतीत पीछा ही नहीं छोड़ता
बार-बार उन्हीं पुराने गलियारों की तरफ मोड़ता है

नजर में घूमती है हर एक इमारत
दिल में आकर कुछ लिख जाती है और छप जाती है
हर बिछड़े चेहरे पर लिखी इबारत
चाहें इमारतें हो गईं हैं पुरानी
इबारतें पड़ गईं हैं धुँधली

यादों के झरोखे खुलते ही
उन पर जो रौशनी पड़ती है
उसमें सब कुछ साफ चमकने लगता है
हर बीता क्षण मुस्कुरा-मुस्कुराकर मुझे बुलाने लगता है
दूर से पुराने गलियारों से आती
दिल को छूने वाली गहरी धीमी आवाजें
जैसे कहती हैं -
आओ एक बार आकर मिल जाओ
उन बीते क्षणों को एकबार फिर जी जाओ
क्यों ये मन भागता है उस ओर
अतीत की गहराइयों से आती
वक्त की बीती दूरियों से आती धीमी-धीमी आवाजें
कानों में करती हैं शोर
पुराने गलियारों की आवाजें
क्यों करती है मुझे भाव-विभोर

न बेचो ईमान

किसी भी लड़ाई झगडे से मिलेगी नहीं शान्ति
मिलजुल कर रहने से ही दूर होगी भ्रान्ति
स्वर्ग सी शान्ति है पनघट में
क्यों खज़ाना खोजते हो मरघट में
जो निधियां खो दोगे वापिस न पाओगे
जो रातों-रात पाना चाहते हो कभी न पाओगे
श्रम और संघर्ष निधियाँ हैं जीवन की
प्रेम और ईमानदारी विधियाँ हैं जीवन की
धोखे की कमाई में नहीं होती बरकत
रातभर डर-डर के बदलते रहोगे करवट
मोटे-मोटे गद्दों में भी नींद नहीं आयेगी
सोने-चाँदी के बर्तनों से भूख नहीं जायेगी
कभी न हट पाएगी माथे की सिलवट
लूट चोरी अपहरण फिरौती से कुछ न मिलेगा
हत्या बलात्कार आदि का दंड भी मिलेगा
घरभर की नींदें उड़ जायेंगी बदलते रहोगे करवट
करो अच्छे काम, न बेचो ईमान
दे दो सबको प्रेम करो सबका कल्याण
जीवन में और भी बहुत कुछ है करने को
हर समय न रहो तैयार मारने और मरने को
सब कुछ मिलेगा, पारस्परिक सहयोग से
कुछ भी नहीं पाओगे गलत कामों के उपयोग से
देखो हँसती खिलखिलाती पनिहारिनें हैं पनघट में
क्यों खज़ाना खोजते हो मरघट में

जाग गई वो सोई लड़की

सबके कहने से बहुत किया
अब कुछ मन की कर लेने दो
अब तक तो सबके लिए जिया
अब खुद के लिए जीने दो

बचपन से सबकी सुनती रही
माँ-बापू ने जो कहा, किया
जो कहा सभी ने करती रही
जो मिला मुझे वो सभी लिया
सब कामकाज सब संस्कार
जब मन में मैंने लिए उतार
कुछ समय गया मैं बड़ी हुई
पति के घर भी मैं चली गई

ज़िंदगी शुरू हुई फिर ऐसे
नवजीवन शुरू हुआ जैसे
कोरा कागज़ बन जीवन शुरू किया
जो सुना वहाँ सब सीख लिया
सबको माना मैंने अपना
मैं भूल गई अपना सपना
जो कहा गया सब करती गई
जो सहा गया सब सहती गई

न कुछ पूछा न कुछ बोली
न दीवाली मेरी, न थी होली
फिर समय और कुछ बीत गया
नई पीढ़ी ने जग जीत लिया
अब मुझको फिर बदलना था चोला फिर

भरना था नई सीख का झोला
यूँ ही जीवन बीत रहा था
एक-एक दिन रीत रहा था

तभी एक दिन जाने कैसे
जाग गई वो सोई लड़की
जो बरसों से खुद को भूलकर
बार-बार थी रूप बदलती
अंतर में जो छुपी हुई थी
वर्षों से जो दबी हुई थी
याद आए उसको वो सपने
कभी जो थे सब उसके अपने
उसने चाहा था क्या करना
उसने चाहा था क्या बनना
बदल के करवट जाग गई है
अपना जीवन माँग रही है
बीत गया है वक्त बहुत
अब कुछ दिन तो जी लेने दो
नाची औरों कि अँगुलियों पर
अब अपने पैरों पर चलने दो
जो दिन रहे शेष उनमें कुछ
अपने मन की करने दो
अब तक औरों के लिए है जिया
अब अपने लिए जी लेने दो
सबके कहने से बहुत किया
अब कुछ मन की कर लेने दो

एक औरत के कितने रूप

कभी कभी अचंभा होता है-
एक औरत के कितने रूप हो सकते हैं
माँ, बेटी, बहू, मामी-मासी, बुआ-चाची, ताई
किसी की माँ, साथ ही किसी की सास, दादी -नानी ,बूढी माई
कैसे एक औरत ने इतने रिश्तों की भूमिका एक साथ निभाई
सदियों से एक औरत में हर रिश्ते के दु:ख-दर्द सहने
सुख देने के लक्ष्य पूरे करने हर रिश्ते की गरिमा बनाए रखने
घर बाहर के सारे काम हँसते-हँसते करने की ताकत कहाँ से आई
इतनी कार्यशक्ति इतनी ममता, सहानुभूति, सहिष्णुता कहाँ से लाई
आदि देवी शक्ति की पूजा अर्चना पुरुष समाज ने खूब निभाई
मातृशक्ति पर आस्था के साथ पूजा कर वरदान प्राप्ति की करी कमाई
फिर क्यों देवी के उपासक -
समाज और घर की नारी में उस देवी को नहीं देख पाते
हर प्रकार के अत्याचार, बलात्कार जैसे कुकृत्य
यहाँ तक के उसे ज़िंदा भी हैं जला देते
अजन्मी बेटी की हत्या जैसे दुष्कृत्य कैसे हैं कर पाते
क्या उन्होंने कभी नहीं सुना कि
जहाँ नारी की पूजा होती है
वहाँ देवताओं का वास होता है
जब एक नारी इतने कर्तव्य निभा सकती है
तो पुरुष उस नारी को
लाचार अबला बना कर
उसका शोषण क्यों करते हैं
क्यों नहीं वह अपने अस्तित्व
अपनी अस्मिता के साथ जी सकती है?

माँ का दिल

एक कहानी बड़ी पुरानी
माँ को सुनाती थी मेरी नानी
नानी को सुनाती थी नानी की नानी
नानी की नानी-नानी की नानी
सुनाती रहीं बच्चों को कहानी
आगे चलती रही कहानी
फिर भी नहीं वो हुई पुरानी
कहानी की शिक्षा भी न बदली
चाहे कई पीढियाँ बदलीं
एक थी माँ , एक था बेटा
बेटा था किस्मत का हेठा
नन्हा-सा था, पिता गए सिधार, किन्तु माँ ने न मानी हार
मजदूरी कर पाला बेटे को, भाग्यशाली बनाया किस्मत के हेठे को
बेटा चला करने एक लड़की से शादी
लड़की ने उसके आगे एक शर्त लगा दी
अगर चाहते हो तुम मुझसे करना शादी
अपनी माँ का दिल लाकर दो तब ही होगी शादी
दीवाना लड़का लेने चल दिया माँ का दिल
माँ ने बेटे की खुशी पर न्योछावर कर दिया दिल
न जाने कैसे बेटे के दिल ने निकाला माँ का दिल
बेटा चला लड़की से मिलने रख के हथेली पे माँ का दिल
उपहार देने उस लड़की को भाग रहा था जल्दी-जल्दी
लगी अचानक ठोकर उसको मारी ज़ोर की पलटी
गिरा ज़मीन पर माँ का दिल, पलभर उसमें धडकन आई
मरते-मरते भी उस माँ के दिल से , एक आवाज़ ये आई
' 'तू ठीक है न मेरे लाडले, तुझे चोट तो नहीं आई?''

सच्चा व्यक्ति वही होता

सच्चा व्यक्ति नहीं होता जो कष्ट दूसरे का जाने
अपने दु:ख जैसा ही वह औरों के दुख को पहचाने
जितना आदर खुद चाहे, उतना दे औरों को मान
स्वाभिमान को सदा बचाए, करे न औरों का अपमान
मन में करे न कभी छल-कपट, न आघात किसी को दे
निश्छल, निष्कपट, स्नेह की सुख-सौगात सभी को दे

अगर चाहता मधुर स्नेह तो मधुर स्नेह देना सीखे
सुख का सागर अगर चाहता तो सुख देना भी सीखे
सच की सीमा कभी न लांघे, झूठ के पास न जाये कभी
चादर में ही पाँव पसारे, बाहर उस के न जाये कभी
अपनों का विश्वास न तोड़े, यह दु:ख होता बहुत बड़ा
सच्चे का अँतर तो हमेशा, सच्चाई से रहे जड़ा

लालच कभी न मन में लाये, करे नहीं रिश्वतखोरी
श्रम से कमाया उसी को खाए, चाहे आय रहे थोड़ी
वसुधा ही परिवार हमारा, मन में उसके सदा रहे
सब का सुख-दु:ख रहे बाँटता सद्कर्मों में लगा रहे
जन-जन में अपनी छवि देखे, मानवता का मान करे
माँ, बेटी, बहू, पत्नी समाज की हर नारी का सम्मान करे
नहीं कामना करे अर्थ की परधन को माटी सम जाने
सच्चा व्यक्ति वही होता, जो कष्ट दूसरे का जाने

नहीं थका मन

पाँव थके पर नहीं थका मन
दूर बहुत है जाना
राह कठिन मंजिल की लेकिन
लक्ष्य एक दिन पाना
क़दम-क़दम पर है कठिनाई
ऊँचाई है, कहीं गहराई
खींचें काँटे दामन पीछे
सभी बने हैं दुश्मन जी के
फिर भी मन तुम न घबराना
दूर बहुत है जाना
अन्धकार चाहे घिर आये
हिम्मत तेरी टूट न जाये
राह लक्ष्य की चाहे मुश्किल
तुमको तो जलना है तिल-तिल
जल कर ही तो ज्योतित होगा
मानव तेरा जीवन
चाहे डरपायें काले घन
थक न जाना, रुक न जाना
दूर बहुत है जाना

ज़िंदगी की नाव

उम्मीदें जगती रहें
कोशिशें चलती रहें
ज़िंदगी की रौशनी तो
जलती रहनी चाहिए
कीमती है पल-पल
नष्ट न हो एक पल
ज़िंदगी तो लम्हा-लम्हा
चलती रहनी चाहिए
रुक न जाये ज़िंदगी
झुक न जाये ज़िंदगी
ज़िंदगी तो हर क़दम पर
बढ़ती रहनी चाहिए
नाव छोटी ही सही
चाहे सागर में बही
ज़िंदगी की नाव
साहिल पर पहुँचनी चाहिए
दो ही पहलू ज़िंदगी के
हारना या जीतना
ज़िंदगी में जीतने की
चाह होनी चाहिए
राह दुर्गम हो अगर
बाधाएं भी आयें मगर
ज़िंदगी में ज़िंदगी की
चाह होनी चाहिए

घर के भेदी

घर के भेदी देश में क्यों इस तरह बढ़ने लगे
क्यों ये काँटे मातृभू के हृदय में गड़ने लगे
चक्षुओं से देशभक्तों के यूँ अश्रु बह रहे
निकल माँ के हृदय से हैं रक्तकण ज्यों बह रहे
देश का हर नागरिक ऐसे भँवर में फँस रहा
झेल आतंकों की दहशत ज्यों अतल में धंस रहा
रक्त रंजित हृदय भी है, रक्त-रंजित आदमी
कहाँ हैं वे दूध की नदियाँ
यहाँ तो बह रही हैं लाल रंग की शोणित नदी
माँ-पिता, दादा या नाना, बालक भी न बच सके
दोष इनका क्या बताओ, शून्य में हर जन तके
आज तक कोई न समझा, न कोई समझा सका है
निर्दयी हत्याओं से अब तक भला किसका हुआ है
त्यागकर दुर्भावनाएं एक हो जायें सभी
काश मिल जाये समस्याओं का हल सबको कभी

मुस्कुरा उठी दीवारें

आए जब हम लौट कर लम्बे सफर से
मुस्कुरा उठीं दीवारें मेरे घर की
ऐसे अपनेपन से मुझको भर लिया बाँहों में अपनी
जैसे माँ की गोद हों दीवारें मेरे घर की
एक-एक कोने की चीज़ मुझसे पूछती थी
याद आती थी कभी क्या तुमको इस घर की
सबसे मिलकर छू के देखा दिल से उनको
नाक बोली- देखो-देखो, ऐसी ही होती है महक घर की
पेड़ आँगन का भी बड़े प्यार से मुस्कुराया
देख लो मैं कर रहा था चौकीदारी तुम्हारे घर की
सूनी -सी मेरी रसोई में बर्तन भी खनके
दोस्त ! जीभर के खाना आज रोटी घर की
देखकर घर की मुहब्बत हर तरफ से
मिट गई सारी थकन लम्बे सफर की
मेरे कदमों की सुनी आवाज़ ज्यों ही
मुस्कुरा उठीं दीवारें मेरे घर की

अनगढ़

मैं तो प्रतिमा बनाने के लिए लाया गया
एक अनगढ़ बिना तराशा गया पत्थर हूँ
सब कुछ पीछे छोड़ आया
अपने पर्वत अपनी नदियाँ अपने घर से मुँह मोड़ आया
नये वातावरण को अपनाने आया
खुद को समर्पित कर दिया तुम्हारे हाथों में
सुरक्षित रहने आया हूँ छुपने को तुम्हारी प्यार भरी पाँखों में
उस अनगढ़ पत्थर को एक नया रूप देना
उसकी एक सुन्दर-सी मूर्ति गढना
उसके दिल के अरमानों को पढ़ना
जो सब कुछ त्याग आया
उसे एक नया घर देना
उसके जीवन को ज्योति से भर देना
सब हाथों में है तुम्हारे
तुम चाहो तो उसे नेह से सँवार दो
उसके जीवन को नई राह नया आधार दो
न देना चाहो प्यार तो फेंक दो
एक राह के ठीकरे-सा छोड़ दो
चाहो तो एक जीवन नेक दो
नहीं तो उसे एक ठीकरे की तरह तोड़ दो
मैं तो फिर भी तुम्हें पूजता रहूँगा
अपने भाग्य पर रोता रहूँगा
न कभी तुम्हें कहूँगा निष्ठुर
क्योंकि अनगढ़ नेत्रहीन ही सही
मैं रहूँगा सदा तुम्हारे घर

अधूरे सपनों से आगे

आज वर्षों बाद उसने अपने लिए सोचने का वक्त कैसे निकाल लिया
वह स्वयं हैरान परेशान है, क्यों स्मृतियों के बंद झरोखों के पट
आज अचानक ही खुलने लगे हैं
जो समय पँख लगाकर न जाने कब उड़ गया था
क्यों वापिस आकर झकझोरने का प्रयास कर रहा है
याद आए वो सपने जो साकार होने से पहले ही टूट गए
मुँह चिढाने लगे वो अपने, जो अकारण ही रूठ गए
बड़े यत्नपूर्वक संजोये सपने, कोरे कागज की तरह कोरे ही रह गए
सारे सपने आँखों के रास्ते बह गए
आज वर्षों बाद उसने स्वयं पर दृष्टिपात किया
जैसे खुद को पहचानने का प्रयास कर रही थी
भागकर दर्पण से पूछा, उसने भी पहचानने से इन्कार कर दिया
भाग्य ने यह कैसा आघात दिया
अचानक ही स्मृतियों के बंद झरोंखों से झाँकी वह लड़की
माँ-पापा की आँखों की पुतली, उछलती कूदती, चँचल तितली
स्कूल-कालेज की सखियों की प्यारी सहेली
मेधावी छात्रा जो आँखों में हजारों सपने लेकर आगे बढ़ने चली थी
एक नया समाज गढ़ने चली थी
वह अवाक थी, उसका जीवन क्यों बनकर रह गया एक पहेली
उसने निश्चय कर लिया अपने जीवन पर पड़ी धूल साफ करने का
एक बार फिर ज़िंदगी जीने का, अपने सपनों को साकार करने का
हाँ, अभी भी चीज़ों में वही ताज़गी, वही सौंदर्य शेष है
मेरा जीवन भी तो अभी शेष है
मुझ कोरे कागज़ में छुपे मेरे सपनों में
एक बार फिर से नये रंग भरने हैं
मुझे अपने अधूरे लक्ष्य पूरे करने हैं

जो कभी घर था

बरसों बीत गए मुझे इस मकान में रहते
न ...मकान शब्द से चौंकिये मत,
मुझे बीच में रोकिये भी मत,
पहले यह भी घर था
चारों तरफ रहती थी चहल-पहल
पल-पल में नोंक-झोंक, पल में ठहाके हँसी के
हर शादी-ब्याह, त्यौहार, जन्मदिन पर उत्सव खुशी के
तब लोग इसे भरा पूरा घर कहते थे
मकान तो यह बाद में बना
मेरे आँगन के पेड़ के पत्तों की तरह
घर के लोग छोड़-छोड़कर जाने लगे अपनी जगह
कोई सूखकर अनजाने देश चले गए
कोई नये गुलदस्तों में लगने चले गए
धीरे-धीरे बदलने लगा घर ...मकान में
रौनकें बदलने लगीं सुनसान में
घर की दीवारें आज भी ढूँढती हैं खोये अपनों को
चाहती हैं फिर से रंगीन कर लें अपने सपनों को
अब तो मौसम भी मुझे डराने लगे हैं
ठंडी गर्म हवाओं के झोंके
खिड़कियाँ और रौशनदान दे रहे हैं धोखे
हवाओं के तूफान दरवाज़ों से रुकते न रोके
बारिश के मौसम से बहुत डर लगता है
बादल भी आ आकर रोने लगता है
दीवारों से आँसू टप-टप टपकने लगते हैं
मेरे आँसू भी उनके साथ गले मिलने लगते हैं
मैं ढूँढने लगती हूँ कोई सूखा कोना
उस मकान में, जो कभी घर था

माँ जैसा न कोई है

माँ जैसा न कोई है न होगा और न कोई हुआ है
दूर रहें बच्चों से सब, दुख माता की बस एक दुआ है
अपने शिशु को ज्यों ही देखे माँ सारे दुख भूल जाती है
बच्चों का मुख देख देखकर, खुशियों में वह झूल जाती है
सुना-सुनकर मीठी लोरी भर देती संगीत शिशु में
माँ की लोरी सुनते ही निंदिया भर जाती उसकी आँखों में
थपक-थपक कर बड़े प्यार से मीठी नींद सुला देती है
बच्चे की आहट सुनते ही भर लेती उसको पाँखों में
रात-रातभर, जाग-जागकर, शिशु का ध्यान सदा है रखती
सोते शिशु को देखे एकटक बड़े प्यार से उसको तकती
बच्चे की सबसे पहली गुरु उसकी माता ही होती है
संस्कार का बीज सर्वप्रथम उसकी माता ही बोती है
बचपन में जो सीखा माँ से जीवन भर न भूले कोई
माँ के हाथों का खाना भी जीवन भर न भूले कोई
माँ के हाथों के खाने में प्यार ही प्यार घुला होता है
इस भोजन के कण कण में ज्यों अमृतरस मिला होता है
माँ के चरणों में स्वर्ग कहावत ही प्रमाण इस सत्य का है
माँ जैसा न कोई है, न होगा और न कोई हुआ है

जीवन एक तपस्या

जीवन एक तपस्या जिसमें
आयुपर्यंत हमको तपना है
जीवन में संघर्ष न आये
यह तो इक झूठा सपना है
संबंधों के लेखे-जोखे
कभी स्नेह हैं कभी हैं धोखे
ग्रहों की भाषा कौन है समझा
जीवन इन्हीं ग्रहों में उलझा
कब ये इधर-उधर हो जाते
किसको कितना नाच नचाते
पर जीवन तो चलता रहता
तप-संघर्ष रक्त में बहता
मिलते और बिछुड़ते रहते
बनते और बिगड़ते रहते
परिभाषाएं जब-तब हैं बदलतीं
हाथों की रेखायें पिघलतीं
उपरवाला है मुस्काता
सौ वर्षों का गणित लगाता
सुख-दु:ख, प्रेम-घृणा, अपना-पराया
कितनी धूप और कितनी छाया
उसका रंगमंच चलना है
हमें आयुपर्यन्त तपना है

नई सुबह की आगत

जो बीत गई वो बात गई
जो काली थी वो रात गई
अब नई सुबह की आगत है
इक नई सुबह का स्वागत है

आँधी तूफ़ान तो आते हैं
आते हैं चले भी जाते हैं
आशा की डोर बंधी रहती
क़ाफ़िले गुज़रते जाते हैं

दुख-दर्द, रंजो-ग़म आते हैं
सब अपने रंग दिखाते हैं
पर हिम्मत वाले डरते नहीं
पल-पल दुख-दर्द से मरते नहीं

अपनों से धोखे भी मिलते
विश्वास हमारे हैं हिलते
खुद का विश्वास नहीं खोना
अपनों से जुदा तुम मत होना

अपनों को जीत लिया बन्धु
तो जीवन में किरणें बिखरेंगी
अँधियारे दूर हो जाएंगे
जीवन रेखाएं निखरेंगी

जो था अतीत वो चला गया
अब मत सोचो कुछ छला गया
अब द्वार खड़ा अभ्यागत है
अब नई सुबह की आगत है

गायेगी तब गोरी

बरस रहे बदरा छमक छम-छम -छम
बोल रही वर्षा झमक झम-झम -झम
गरज रहे बदरा कड़क कड़-कड़ -धूम
नाच रहे मोर छनक -छन-छन- धुन

झूल रही गोरी झुलावे पिया
तड़प रही बिरहिन न आये पिया
सावन की झड़ियाँ जलायें जिया
पिया बिन कैसे लागे जिया
टूट गए अरमान सिर धुन-धुन-धुन

चमक रही बिजली गगन लागी आग
धमा-धम -धमा-धम नगाड़े रहे बाज
बिरहिन के मन में बस एक ही लगन
भीगे-भीगे सजना घर रखें कदम
गायेगी तब गोरी गुन-गुन-गुन-गुन

झूलेगी गोरी झुलायें सजना
सावन में पूरा हो जाये सपना
बरसेंगे बादल सरसेंगे दिल
बीतेगा जीवन यूँ हिलमिल-हिलमिल
झूम रही गोरी सपने बुन-बुन
बरस रहे बदरा रिमझिम-रुनझुन

व्यवस्था आपदा ग्रस्त है

सैकड़ों वर्षों की परतंत्रता के बाद देश स्वतंत्र हुआ
खत्म हुआ राजतंत्र भी देश अपना गणतंत्र हुआ
गणतंत्र था अधिकारों और कर्तव्यों का संगम
किन्तु इनके दुरुपयोग ने बना दिया देश को जंगल
देश का हर नागरिक जागरूक है अधिकारों के लिए
किन्तु भूल गया है वो कर्तव्य जो उसे संविधान ने दिये
जनता की यह प्रवृत्ति देश के लिए बहुत घातक है
देश की एकता, देश की उन्नति, सब में रूकावट है
ऊपर से नीचे तक देश का पूरा यंत्र-तंत्र टूट रहा है
हर इन्सान केवल स्वार्थ के लिए देश को लूट रहा है
देश की पूरी व्यवस्था आपदाग्रस्त है
हर जागरूक जिम्मेदार नागरिक इस विपदा से त्रस्त है
देश में अनुशासन और व्यवस्था के लिए
देश को संसार में उच्च स्थान दिलवाने के लिए
हर नागरिक स्वयं को नियंत्रित, व्यवस्थित करे
सब एक-दूसरे के सहायक बनें, न कि आतंकित करें
समाज के लिए प्रत्येक व्यक्ति स्वयं में परिवर्तन लाये
हम स्वयं को सँवार कर ही समाज को सँवार सकते हैं
संसार में भारत की छवि को निखार सकते हैं
समाज सँवारने से अपना भारत देश सँवर जाएगा
तिरंगा ध्वज शान से लहराकर भारत की शान बढ़ाएगा

कैक्टस और कँटीली यादें

कहते हैं घर में कैक्टस नहीं लगाना चाहिए
लेकिन मैंने कैक्टस के गमले सजा रखे हैं
कैक्टस के काँटे याद दिलाते हैं उन यादों की
जो कैक्टस से कम कँटीली नहीं हैं
ये कँटीली यादें ही
मेरे जीवन का सहारा हैं
मेरे जीने का मक़सद हैं
मेरी प्रेरणास्त्रोत हैं
मुझमें संघर्षों से लड़ने की
ताकत भरती हैं
एक-एक काँटा
एक-एक याद बनकर
मेरे सामने खड़ा है
भर रहा है मुझमें ऊर्जा
निकाल दो काँटों को, काँटों से
न तोड़ना जीवन से नाते
तोड़ना तो काँटों को चाहिए

अनोखा भारत

हमारा भारत बहुत अनोखा है
यहाँ कहीं ईमानदारी है, कहीं धोखा है
यहाँ ग़रीब से ग़रीब हैं
तो अमीर से अमीर भी हैं
महल और झोंपड़ी साथ-साथ रहते हैं
सुख-दु:ख के प्रमाण साथ-साथ रहते हैं
कोई भूखे बेरोजगार हैं
कोई मालिक हैं मिलों के
कैसे मेल बन पायेंगे दोनों के दिलों के
समाजवाद का नारा न जाने कहाँ खो गया
नया नारा ''रातों-रात अमीर बनो'' हो गया
भाँजा-भतीजावाद, भ्रष्टाचार, जातिवाद
किसे याद रहेगा इतने ''वादों'' के बीच समाजवाद
चाहे देश की एकता हो जाय बर्बाद
नहीं लगाएंगे भारत माता की जय की आवाज
धर्म की, भाषा की, बिजली पानी की समस्याएं
आजाद भारत के राज्यों में आपसी मनमुटाव
नदियों के पानी पर लगते हैं दाँव
हम दो और हमारे दो के परिवार में
बूढ़े माता-पिता की गिनती ही नहीं रह गई
ये भारत की संस्कृति किस तूफान में बह गई
यह चमत्कार से कम नहीं है कि भारत फिर भी एक है
शायद अभी भी कुछ बन्दों की नीयत नेक है
उनके पुण्य-प्रताप ने ही भारत के पतन को रोका है
सत्य है, हमारा प्यारा भारत बहुत ही अनोखा है

मैं यूँ ही भटकी

मैं ढूँढ फिरी हूँ गलियों में
मैं पूछ चुकी हूँ कलियों से
मैं घूम फिरी वन-वन-उपवन
मैं भटक चुकी जंगल-जंगल
देखे पर्वत, गिरि, गुहा, कंदर
नंदन, कानन, सुन्दर-सुन्दर
साधू-संतों से, मुनियों से
राहें माँगी थीं गुणियों से
कुदरत के कण-कण से पूछा
दुनिया के जन-जन से पूछा
हर फूल-फूल हर पात-पात
कोई न बताये, कोई बात
सागर की गहराई से पूछा
अम्बर की ऊँचाई से पूछा
जब मिला नहीं कोई उत्तर
झाँका मैंने अपने अन्दर
मन मन्दिर में थी एक किरण
छुपकर बैठी थी अंतर में
रो कर जब उसे पुकार उठी
वह विहँस उठी मन प्रांतर में
मेरा प्रभु तो मेरे अन्दर
मेरी खुशियाँ मेरे अन्दर
मैं राह भूल यूँ ही भटकी थी
नगर-नगर और डगर-डगर

कुछ शेर कुछ बब्बर शेर

रोज आते हैं आज के समाचार
जगह-जगह भ्रष्टाचार, दुराचार, अत्याचार
कैसे-कैसे होते हैं ये समाचार
रोंगटे खड़े हो जाते हैं जिन्हें पढ़कर
डर और भय सताने लगते हैं सिर चढ़कर
आज उनकी बारी थी
शायद कल हमारी बारी हो
चलो भई लुटने-मरने कि तैयारी हो
मिट गई नैतिकता-अनैतिकता के बीच की लकीर
इन्सान की सोच बन गई है फकीर
कल हमारी बारी से याद आई
शेर और खरगोश की कहानी
कहानी तो है बड़ी पुरानी
मुझे सुनाती थी मेरी नानी
कैसे बुद्धिमान खरगोश ने अत्याचारी शेर को कुएँ में गिराया
कैसे शेर से अपने भाई-बंधुओं को बचाया
क्या आज समाज में कोई ऐसा बुद्धिमान खरगोश नहीं
जो अत्याचारियों, भ्रष्टाचारियों को कर दे सही
परन्तु खरगोश भी क्या करें
जंगल में तो एक शेर था
यहाँ तो अनगिनत शेर हैं
कुछ शेर और कुछ बब्बर शेर हैं

नाचे मन मोरा

घिरे-घिरे काले घनघोरा
देख उन्हें नाचे मन मोरा
साथ-साथ लाते बून्दनियाँ
देख उन्हें भूलें हम दुनियाँ

आते करते गर्जन-तर्जन
झूम उठे दुनियाँ का तन-मन
सुनकर इतने ढोल ढमाके
घर के बाहर हैं सब झाँके

बंद करें घर के दरवाज़े
सुनकर बिजली की आवाज़ें
कहीं गिरी तो नहीं है बिजली
कितने ज़ोर से चमकी बिजली

कितनी घोर-घिरी हैं घटायें
अन्दर चलो पकौड़े खायें
आते रहना काले बादल
तुमसे हम करते हैं निहोरा

घिरे-घिरे काले घनघोरा
देख उन्हें नाचे मन मोरा

चल निकला यादों का बजरा

कुछ भूली बिसरी यादों से मैंने गूँथा इक प्यारा सा गजरा
फिर पहन के वह प्यारा गजरा चल निकला यादों का बजरा
बह चला समय की धारा में
खाता झकझोले जीवन के
याद आये बारी-बारी से
सारे हिचकोले जीवन के
बचपन के प्यारे दिन याद आये
पचपन के बूढ़े दिन याद आये
कुछ याद आये दिवस जवानी के
हम पात्र थे किसी कहानी के
तब दुनिया बड़ी सुहानी थी
जीवन में बहुत रवानी थी

चले-चलते मेरा बजरा , शायद धारा से भटक गया
गिन डाले बरस अंगुलियों पर जीवन कित आ कर अटक गया
अब हम भी हैं यादें भी हैं जीवन के कुछ वादे भी हैं
फिर भी क्यों कभी अचानक से है रिस-रिस कर बहने लगता
दिल से आ कर मिलने लगता कुछ सुख कुछ दुख कहने लगता
ऐसे में हट जाता सारा
आंखों और दिल पे लगा पहरा
अनजाने आंखों के रस्ते
बहने लगता दिल का कमरा
फिर एक बार-फिर एक बार
चल निकला यादों का बजरा

बेटी की माँ के उदगार

सूर्य चन्द्र की सारी किरणें मेरे घर में बिखरीं
मेरे घर के आँगन में इक सोनपरी है उतरी
सूरज की सुनहरी किरण-सी मेरे घर में आई
चंदा की रुपहली चाँदनी मेरे घर आँगन में छाई

एक अनोखी गूँज आ रही घर के हर कोने से
मन्दिर की सी घंटियाँ बजीं उसके हँसने-रोने से
शीतल मंद समीर सरीखी मन को है सहलाती
मधुर-मधुर संगीत ध्वनि सी सबको है बहलाती

गुड़िया,मुनिया,चाँद, सोनिया नाम बुलाऊं कितने
बिटिया ने भर दिये रंग मेरे जीवन में कितने
महक उठा है, चहक उठा है सारे घर का जीवन
जबसे घर में आई है यह प्यारी-सी सूर्य किरण

बसती सबकी आँखों में, सबकी आँखों की पुतली
पड़ी अंगूठा चूस रही है, वह करती आवाजें तुतली
पुन: छवि बचपन की बन, इक सोनपरी है उतरी
लाई बहारें जीवन में बिटिया, बहु खुशहाली है छाई
सूरज की सुनहरी किरण सी मेरे घर में आई

रिश्तों के मेले

दुनिया एक ऐसा विस्तृत प्रांगण
जिसमें लगते हैं रिश्तों के मेले
कुछ खून के रिश्ते होते हैं
कुछ रिश्ते होते हैं मुँहबोले
मेले में अपने पराये दूर-पास के लोग
न जाने कहाँ से हैं आये हुए
कुछ सही सलामत हैं बने हुए
कुछ मेले में बिछुड़ गए
कुछ वर्षों के लिए
कुछ सदा के लिए बिछड़ गए
कुछ ऐसे भी मिल जाते हैं
जो किसी का सहारा पाकर उसके अपने बन जाते हैं
फिर उसके परिवार का हिस्सा भी बन जाते हैं
कुछ रिश्तों का गणित भी यही जोड़-घाटा दिखाता है
कुछ रिश्ते जीवनभर चलते रहते हैं
कुछ वक्त की चादर में पड़ी सलवटों तले
दबकर कहीं खो जाते हैं
जिन्हें सलवटों को हटाकर
वक्त रहते बचाया जा सकता है
कुछ रिश्ते ऐसे टूटते हैं कि
जोड़ने के प्रयत्नों से भी जुड़ नहीं पाते
रिश्तों के ये मेले जीवन भर लगते रहते हैं
हर रंग के रिश्ते अपना-अपना रंग दिखाते रहते हैं
आते-जाते रहते क्योंकि दुनिया तो है एक विस्तृत प्रांगण

बॉर्डर

आपको अजीब लगेगा मेरी कविता का अंग्रेजी नाम
पर क्या करूँ मेरी समस्या की जगह का यही है नाम
समस्या है उस जगह की जहाँ खुदी कोई सीमारेखा नहीं
कौन-सी रेखा यू.पी.- राजस्थान को अलग करती है
राजस्थान कहाँ खत्म होता है, कहाँ यू.पी. शुरू होती है
यह राजनैतिक अलगाव स्थल किसी ने देखा नहीं
सिर्फ बॉर्डर के नाम से जगह की पहचान है
जिसके एक तरफ यू.पी. और एक तरफ राजस्थान है
मेरी कविता में समस्या है एक प्रैस वाले धोबी की
शुक्र भगवान का उस पर पड़ गई नज़र एक प्रैस वाले की
समस्या यह है कि जहाँ उसकी प्रैस वाली रेहड़ी खड़ी होती है
वहीं कहीं यह समस्या बॉर्डर लाईन शुरू होती है
बेचारा प्रैसवाला दोनों तरफ के दारोगाओं से परेशान है
दोनों हैं उस जगह के मालिक जहाँ उसकी दुकान है
दोनों के अहं की प्रतियोगिता में प्रैसवाला घुट रहा है
सीमारेखा के चक्कर में एक ग़रीब लुट रहा है
दोनों दारोगाओं के कपड़ों की गठरियाँ रोज प्रैस के लिए आती हैं
पन्द्रह मिनिट में प्रैस हो जाये चेतावनी साथ आती है
काम के पैसे देना तो उन्होंने सीखा ही नहीं है
क्योंकि उन्होंने पैसे देना नहीं , लेना ही सीखा है
समस्या केवल इस प्रैसवाले की ही नहीं है
और भी बहुत हैं, जिनकी कहानियाँ पत्रकारों से अनकही रह गई हैं
सवाल यह है कि जब हमारे राजनेता
नहीं हल कर पाते समस्या अपने राज्यों के बॉर्डर की
एक अवांछित सीमारेखा यू.पी.-राजस्थान की
तो कैसे हल कर पायेंगे समस्याएं देश की सीमा की
पाकिस्तान, चीन, बांग्लादेश आदि के साथ हिन्दुस्तान की

रिश्ते दिल के कालातीत

रिश्ते दिल के कालातीत होते हैं
जिनको वर्षों से चढ़ती ग़र्द भी धुँधला नहीं पाती
इन रिश्तों में काल कोई व्याघात नहीं डाल पाता
कोई चाहने पर भी आघात नहीं पहुँचा पाता
दिल से बने रिश्ते कभी-कभी
रक्त संबंधों के रिश्तों से अधिक पक्के हो जाते हैं
जैसे कच्चे धागों से बंधे राखी के रिश्ते पक्के होते है
रिश्तों का आधार क्या मात्र रक्त सम्बन्ध है?
कहावतें बन गईं हैं कि नाखूनों से माँस जुदा नहीं होता
अपितु रक्त संबंधों के द्वारा कभी-कभी
धड़ से सिर भी जुदा हो जाता है
इसके उदाहरण हैं युवा प्रेमियों को और
विवाह से बँधी बेटी एवं उसके पति को
खानदान की इज्ज़त के नाम पर
कभी बल से कभी छल से
अपने ही सगे पिता,भाई, चाचा, मामा द्वारा मार देना
क्यों ये लोग दिल के रिश्तों को दिल की नज़र से नहीं देखते
काश ! ये लोग दिल को अपने दिल से महसूस करें
क्योंकि दिल के रिश्ते न टूटते हैं , न उन्हें तोड़ना चाहिए
उन्हें तो अमर्त्य समझना चाहिए
वे तो कालातीत होते हैं
वे कभी अतीत नहीं बनते

अपनी जड़ों के पास

अपनी जड़ों को छोड़कर जीना
कितना कठिन है, पूछो एक मूक वृक्ष से
वह भी जब अलग कर दिया जाता है अपनी जड़ों से
तब सूख कर ठूँठ रह जाता है
कभी-कभी दुबारा उसे धरती माँ से मिला दिया जाता है
तब यदि प्राण शेष होते हैं तो फिर हरा हो जाता है
मैं पूछती हूँ उन बच्चों से जो अपने माता-पिता, भाई-बहन
ननिहाल,ददिहाल , बचपन के मित्र
स्कूल,कालेज के साथी दिल में छपे उनके चित्र
सबको छोड़ कर चले जाते हैं विदेश
छोड़ कर अपना घर , शहर और देश
वे तो मूक नहीं हैं वृक्ष की तरह
क्यों स्वयं के लिए चुन रहे हैं विरह
जा-जब याद आयेंगे घर-परिवार , संगी-साथी
स्वतंत्रता दिवस, गणतंत्र दिवस होली, दीवाली, भैयादूज, राखी
बचपन की वो गलियाँ, पड़ौसी, परिवार
स्कूल-कालेज, चहकते, महकते बाज़ार
तब क्या हृदय सह पायेगा, न सह पायेगा न कह पायेगा
जब-जब बीती यादें सताएंगी एक-एक पल धड़कनें रोक जाएगा
वृद्धावस्था में विदेश में पले बच्चे कितने रहेंगे उनके प्रति सच्चे
एकल परिवारों वाले देश में बुढ़ापे में मिलेगा वृद्धाश्रम
अनजाने, अपरिचित विदेशियों के बीच भूल जायेंगे अपना नाम
क्यों चाहते हो अपने हाथों से ज़हर पीना
आसान नहीं अपनी जड़ों को छोड़ कर जीना
वापिस आ जाओ अपनों और अपनी जडों के पास
तो आकर अपने घर में, लो खुल कर साँस

ख़्वाब हमने बुने थे

कैसे-कैसे हम कहें
क्या-क्या कहें
क्योंकर कहें
हम कहेंगे जब
ज़माना सोचता रह जाएगा
कितने रंजोग़म सहें
इसका हिसाब रखेगा कौन
बाढ़ में ग़म की
ये सारा क़ायनात बह जाएगा
फ़लसफ़े हैं फ़ेल
अब तो अक्ल धोखा दे रही है
तुम कहो दीवाने को
कैसे कोई समझायेगा
क्या भला है , क्या बुरा है
सोचना मुमकिन नहीं
आगे होगा क्या
इसे तो अब खुदा बतलायेगा
भूली बिसरी चंद यादें
चंद लम्हे तेरे साथ
जो जिये, अच्छे जिये
इससे न बढ़ कर कोई बात
पर बता अब तेरे बिना
हमसे जिया क्या जाएगा
कैसी-कैसी मुश्किलें हैं
कैसी-कैसी उलझनें
कैसे-कैसे झूठे सच्चे
ख़्वाब हमने थे बुने
कह सकें न
सह सकें न
वक्त क्या दिखलाएगा